AAWNA TIMES

The United Voice of Alumni Association of Madhubani NavodayA

ISSUE: 04 **2020** *PAGES 56*

यादों
के झरोखों से

बाएं से दाएं: प्रदीप पासवान (582), अरविन्द कुमार दास (448), कुमार सुधीर आनंद (435) और सौरभ कुमार पांडे (439) 4 X 100 मीटर रिले दौड़ में स्वर्ण पदक जीतने के बाद ; स्थान : बी.एम.पी. ग्राउंड बेगूसराय

छात्राएं विद्यालय परिसर में हॉस्टल वार्डन के साथ

AAMNA TIMES

Establishing the Connectivity

संपर्क का सुखद अहसास

कितने खूबसूरत हुआ करते थे बचपन के वो दिन, सिर्फ दो उंगलियाँ जुड़ने से दोस्ती फिर से शुरु हो जाया करती थी।

आइये रिश्तों को अहसास से भरिए टेक्नोलॉजी से नहीं...

AAMNA TIMES 2020

आमना टाइम्स 2020 टीम

संपादन

लेफ्टिनेंट कर्नल विनय कुमार झा (1992-99)
अम्बुज कुमार (1990-97)
कुमार सुधीर आनन्द (1991-98)
संतोष कुमार (1992-99)
मनोज कुमार (1988-95)
रजनीश रंजन (1995-2002)
रवि झा (2011-18)

संकलन और समन्वय

डॉ अरविन्द कंचन (1992-99)
अर्चना कुमारी (1992-99)
दीप्ति झा (1988-95)
शालिनी कुमारी (2012-19)
ज्योति कुमारी (2012–19)

मार्गदर्शन

डॉ प्रशांत कुमार चौधरी (1987-94)
कुमार शांतनु (1987-94)
तेज नारायण (1988-95)
बिनोद कुमार (1990-97)
उत्साह कुमार (1986-93)

आवरण चित्र
मनोज कुमार पासवान
(572) बैच 1992–99

संपादकीय

आमना को एक संगठन के रूप में स्थापित हुए 10 वर्ष पूरे हो चुके हैं। समय के साथ–साथ यह और अधिक मज़बूत और प्रासंगिक होता जा रहा है। इसकी आवाज़ को मधुबनी नवोदय के सभी परिवारजनों तक पहुँचाने के उद्देश्य से आमना टाइम्स का प्रकाशन शुरू किया गया था। पुरानी कड़ी को बरकरार रखते हुए हमने इस वर्ष कुछ नए लोगों को भी टीम में शामिल किया। इस प्रकार, एक नई ऊर्जा के साथ, सामूहिक प्रयास से आमना टाइम्स का चौथा संस्करण अब आपके समक्ष प्रस्तुत है।

COVID–19 के दिनों में, जब सारे संपर्क छूट रहे हैं या टूट रहे हैं, हमने महसूस किया कि 'संपर्क' तो हम नवोदयन की सबसे बड़ी जमा पूँजी है। विद्यालय और एक–दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव ही तो वह कड़ी है जो हमें जोड़े रखती है। उसी थीम को केंद्र में रखते हुए, हमारी टीम ने वर्तमान संस्करण का प्रारूप तैयार किया। फिर विद्यालय, विगत वर्षों के स्टाफ और सभी बैच के एलुमनाई से संपर्क स्थापित किया गया। और जब संपर्क हुआ तो एक से बढ़कर एक कई पिटारे खुले। और, हर पिटारे से अनमोल हीरे–जवाहरात निकले। किसी की संघर्ष यात्रा किसी के संस्मरण तो किसी की कविता और आलेख – इतने सकारात्मक और उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं मिलीं कि पूरी टीम की हौसला फजाई होती गयी। और कुछ इस तरह हमने पत्रिका के चौथे संस्करण को मूर्त रूप दिया।

नवोदय विद्यालय हम सभी छात्र – छात्राओं के लिए हमेशा एक प्रेरणास्रोत रहा है और भविष्य में भी बना रहेगा। COVID–19 ने हमें एक और मौका दिया है उस प्रेरणास्रोत के साथ और प्रगाढ़ता से जुड़ने का। आइए हम सब मिलकर इस संपर्क को और मजबूत बनायें! आमना टाइम्स 2020 का प्रयास है कि नवोदय से निकले सभी बच्चे अपने आप को विद्यालय के साथ और एक–दूसरे के साथ जुड़ा हुआ महसूस कर सकें। उम्मीद करता हूँ कि हमें इस प्रयास में सफलता मिलेगी।

आमीन !

आपके सुझाव और विचार की प्रतीक्षा रहेगी...

aamnaemag@gmail.com

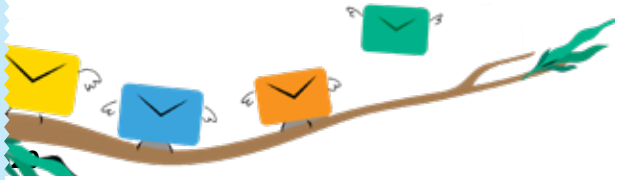

विषय सूची

• संदेश	3-4
• नवोदय की कहानी...विद्यालय की जुबानी	5-7
• नवोदय के चार सदन एक ही वृक्ष की चार डालियां	8
• साक्षात्कार	9
• Treasure of Joy-Our Life	10
• बचपन	10
• मोर वाटिका	11
• मत्स्य क्रीड़ा	12
• पुनर्जन्म	12
• जल रंग	13
• विद्यालय प्रांगण से	14-17
• जन्नत वाली कैंटीन	18
• अमेरिका: मेरी यात्रा	19
• पत्रकारिता- मेरा सफर, मेरी कहानी	20-23
• 'सरक'...बिहार से हो क्या ?	24-25
• आत्म-दर्शन	26
• Confidence is Beauty	26
• कलाकार की कूची	27-28
• मैं नारी हूँ!	29
• अग्रिम मानव!	29
• कैसा है श्रृंगार ?	30
• एक खत नवोदय दोस्त के नाम	30

विषय सूची

• वो प्रांगण	31
• जिंदगी से फिर	31
• नवोदय चले	32
• तुम्हारी तस्वीर : एक नज़्म	33
• 'देवी' पूजा कबूल करती!	33
• बचपन: वर्तमान का सुख या भविष्य का बोझ	34
• गुफ्तगू	35
• स्वास्थ्य और जीवन शैली	36-37
• Down The Memory Lane...	38
• We are the Backbenchers	38
• Career in Art, Design & Architecture	39-40
• Blueprint for Navodaya Vidyalaya 2.0	41-42
• Agriculture: Hope of Indian Economy	43
• विद्यालय की शुरुआती यादें	44-45
• छात्र, विद्यालय प्रांगण, सपने और मित्र	46-47
• वार्षिक गोष्ठी, दिल्ली	48
• वार्षिक गोष्ठी, मधुबनी	49
• Alumni Journey	50
• Student Art Gallery	51

संदेश

<u>आमना अध्यक्ष</u>

Dr Prashant Kumar Chaudhary
(109) Batch-1987-94

आमना परिवार को आमना-टाइम्स के चौथे संस्करण (२०२०) के आगमन पर बधाई!

आज जबकि हमारी रोजमर्रा की जिंदगी पर कोरोना वायरस का असर दिख रहा है, हमारा संगठन बखूबी अपना कर्तव्य निर्वहन कर रहा है। कहना यह चाहिए कि इस महामारी की घड़ी में भी आमना परिवार धैर्यपूर्वक अपने बंधु-बांधवों के साथ है। इस काल में भी आमना टाइम्स के नए संस्करण का प्रकाशन एक शुभ संकेत है। आमना टाइम्स हम सबका अपना मंच है, जहां हम अपनी बातें एक दूसरे से प्रकारांतर में साझा करते हैं। अपना अनुभव आमना परिवार के सदस्यों से साझा करना, हमें मजबूती देता है। इसी तरह नयी विधाएं सीखते हुए हम आगे बढ़ते हैं।

उम्मीद करता हूं कि अपनी पूर्व-संस्करणों के अनुभव के अनुसार इस अंक की प्रतिलिपि भी मिथिलांचल के हर एक ग्राम, पंचायत, प्राइमरी स्कूल, शहरी क्षेत्र के स्कूल और विभिन्न प्रशासनिक स्तरों तक पहुंचेगी और हर बार की तरह इन सभी जगहों से हमें संदेश पहुंचेंगे, जो अगले अंक में प्रकाशित होंगे।

इस संस्करण को मूर्त रूप में लाने के लिए नए संपादन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं !

उम्मीद है आमना टाइम्स का २०२० संस्करण सभी को पसंद आयेगा !

पढ़ते रहिए.... लिखते रहिए..... जुड़े रहिए!

संदेश

जवाहर नवोदय विद्यालय,मधुबनी

कोरोना काल के इस संक्रमण समय में जब चहुंओर निराशा के वादल छाये हों अनिश्चितता का माहौल हो, ऐसे समय में यदि कहीं से आशा, उम्मीद की कोई ज्योति दिखाई दे तो निश्चित ही यह शुभ फल देने वाला है । इन विषम स्थितियों में ज०न०वि०,मधुबनी के पूर्व छात्रों द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन इसी आशा-उम्मीद का उदाहरण है ।

किसी भी विद्यालय का वास्तविक मूल्यांकन उसके पूर्व छात्रों की समाज में स्वीकार्यता को देखकर किया जा सकता है । ज०न०वि०,मधुबनी के विद्यार्थी आज सभी क्षेत्रों में कार्य कर रहे है । **"बैक टू रूट"** का जो विचार इन विद्याथियों ने अपनाया है, वह **सराहनीय** है और सभी के द्वारा अपनाये जाने के योग्य है ।

पूर्व में इन विद्यार्थियों द्वारा ज०न०वि०,मधुबनी एवं अन्य स्थानों पर भी कई कार्यक्रम आयोजित किये गये जिससे वर्तमान में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लाभ हुआ है ।

भविष्य के लिए भी इन पूर्व छात्रों द्वारा विद्यालय के विकास के लिए कई योजनायें है, जिनके सफल क्रियान्वयन के लिये मैं इन्हें शुभाशीष देता हूँ ।

इन लोगों के विचार सभी सामान्य जन तक इस पत्रिका के माध्यम से पहुचे ऐसी आशा है ।

ज०न०वि०,मधुबनी के पूर्व विद्यार्थियों को उनके सुखमय भविष्य के लिये मंगलकामना और इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये बधाई ।

28/01/2020

(अक्षय कुमार द्विवेदी)
प्राचार्य
ज०न०वि,मधुबनी

संपर्क का सुखद अहसास
Establishing the Connectivity

लेफ्टिनेंट कर्नल
विनय कुमार झा
(600) बैच-1992-99

नवोदय की कहानी... विद्यालय की जुबानी

बात 1986 की है। मधुबनी से 5 किलोमीटर की दूरी पर शहर के कोलाहल से दूर मेरा निवास था- रांटी और रामपट्टी के बीचो-बीच। पीले रंग के कुछ भवन, एक बड़ा प्रांगण, कुछ खाली जमीन और जिला कारागार - मेरी पहचान इन्हीं के साथ थी।

इस बीच कुछ खास हुआ। कहीं से सुनने में आया कि बिहार सरकार ने मुझे केंद्र सरकार की किसी संस्था, शायद मानव संसाधन विकास मंत्रालय, को सौंपने का फैसला किया है। उस जमाने में हमारे प्रधानमंत्री एक युवा नेता हुआ करते थे - श्री राजीव गांधी। उन्होंने देश के हर जिले में मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए एक विशेष विद्यालय खोलने का निर्णय लिया। मधुबनी जिला का विद्यालय मेरे परिसर में बनना तय हुआ। शुरू में तो मुझे यह जानकर अच्छा नहीं लगा क्योंकि मैंने अपनी पहचान 'जिला कारागार' के साथ बना ली थी। लेकिन यह सोच कर उत्साह भी हुआ कि यदि यहां विद्यालय बना तो बहुत कुछ नया देखने को मिलेगा और मैं भी समाज के भविष्य को संवारने में कुछ योगदान दे पाऊंगा।

धीरे-धीरे सुनी सुनाई बातों को जमीन पर घटित होते देखने लगा। अधिकारियों ने आकर मुआयना किया। कागजी कार्रवाई हुई। और, आखिरकार वह दिन भी आया जब तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बिंदेश्वरी दुबे ने 1986 में मेरे आंगन में नवोदय विद्यालय का शिलान्यास किया, उस दिन ऐसा लगा जैसे कि मेरा पुनर्जन्म हुआ हो। मुझे एक नया नाम मिला, नई पहचान मिली - जवाहर नवोदय विद्यालय रांटी, मधुबनी। रामपट्टी को बुरा भी लगा कि विद्यालय के ज्यादा नजदीक होने के बाद भी नाम रांटी का जुड़ा, उसका नहीं। बड़ी मुश्किल से मना पाया था मैं उसे!

छात्रावास और मेस परिसर

जो कौतूहल मेरे मन में था वह धीरे-धीरे ऊर्जा और उत्साह में तब्दील होता गया। जिला के हर कोने से हर तरह के बच्चे और बच्चियां इकट्ठा होते गए। कुछ बच्चों के चेहरे पर उत्कंठा थी, तो कुछ काफी गमगीन थे। आखिर अपना घर-बार छोड़कर जो आए थे। उन्हें देखकर मेरे अंदर का वात्सल्य जाग उठा। मैंने दोनों हाथ बढ़ाकर उन्हें अपने दामन से लगा लिया। उन 80 बच्चे-बच्चियों के लिए मैं मां और बाप दोनों बन गया।

आगे आने वाले कुछ दिन मेरे लिए काफी रोमांचक रहे। हर दिन एक नया अनुभव था। गांव के सरकारी स्कूलों से आए बच्चों ने जब बड़ी-बड़ी इमारतें देखी तो वे हतप्रभ रह गए। उनके लिए जैसे सब कुछ ही नया था। इतना बड़ा खेल का मैदान और खेल के इतने सारे साधन। वॉलीबॉल, फुटबॉल और हॉकी से रूबरू होना एक रोमांच जैसा ही तो था। गांव के भोले बचपन को साथ लाए इन बच्चों ने जब संगीत - कक्ष में इतने सारे वाद्य-यंत्र और साजो सामान देखे, तो उनकी आंखें खुली की खुली रह गईं। जिस प्रकार की किताबें उन्हें पुस्तकालय में नजर आई, वह उनकी परिकल्पना से बाहर की बात थी। ऐसी कई चीजें थीं जो बच्चों की जिज्ञासा और बढ़ा रही थी। और, उनकी उत्कंठा मुझे एक रोमांच का अनुभव करा रही थी। मैं भी एक जिम्मेवार अभिभावक बन गया। मुझे इस बात की फिक्र होने लगी कि मेरे बच्चों को रात के अंधेरे में कोई सांप या कीड़ा ना काट ले। बिजली के अभाव में जनरेटर की व्यवस्था की जाए ताकि मेरे बच्चे पूरे प्रकाश में पढ़ सकें। छात्रावास में उन्हें समुचित बिस्तर दिए जाएं ताकि वे चैन की नींद सो सकें और मैं उन्हें निहार सकूं। कक्षा में समुचित फर्नीचर हो ताकि वे पढ़ाई पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकें। 34 वर्ष बीत गए हैं, लेकिन अब भी मेरी कोशिश जारी है। ना मेरा उन बच्चों के लिए प्यार कम हुआ, ना ही उनकी मासूमियत। समय के साथ यह वात्सल्य और भी प्रगाढ़ होता गया।

विशिष्ट दिनचर्या - हर दिन कुछ खास

आज जब 34 साल बाद मैं अपने बच्चों के साथ बिताए पलों के बारे में सोचता हूं, तो मन खिल-सा उठता है। वैसे तो दिनचर्या वही होती थी, पर अनुभव हर दिन कुछ खास होता था।

रात का अंधेरा ज्यों-ज्यों घटता जाता था और पौ फटने को आता था, दोनों तरफ छात्रावासों में कुलबुलाहट शुरू हो जाती थी। कुछ अनमने तो कुछ नाराज, बच्चे-बच्चियां पीटी ग्राउंड की तरफ रुखसत करते हुए दिखते थे। उन्हें विद्यालय प्रांगण में दौड़ते और व्यायाम करते देख कर मुझे बहुत आनंद आता था। अपने बच्चे को स्वस्थ और मुस्कुराते देखकर आखिर किस अभिभावक को खुशी नहीं होगी? पीटी खत्म होने की सीटी बजते ही बच्चे बच्चियां जिस प्रकार अपने-अपने छात्रावासों की ओर रेस लगाते थे, वह जोश कुछ अलग ही था। नहा-धोकर बच्चे अपना-अपना प्लेट उठाए

(और अक्सर बजाते हुए) मेस की ओर चल पड़ते थे। मेस में उन्हें छोला -चावल का डबलिंग मारते देख और पुलाव से मूंगफली बीन कर खाते देख मन को एक सुकून-सा मिलता था।

पेंटिंग करती छात्राएं

विद्यालय का प्रसिद्ध छोला पुलाव

फिर तैयार होकर बच्चे कक्षा की ओर रुखसत करते। वो नीले -सफेद स्कूल यूनिफार्म में पूरी स्मार्टनेस के साथ मार्च-पास्ट करते जब सुबह की असेंबली में दाखिल होते थे तो मैं गर्व से खिल उठता था। उन्हें नवोदय गीत गाते, शपथ लेते, 'आज का चिंतन' सुनाते और प्राचार्य महोदय की बातों को गौर से सुनते देख मैं भी उनमें से एक बन जाता था। कक्षा के दौरान मैंने उन्हें तन्मयता से अध्ययन करते भी देखा और कुछ को एम.आई. रूम से दवाई लेने के बहाने हॉस्टल जा कर आराम फरमाते भी देखा। कुछ बच्चे तो इस समय का उपयोग छुप-छुपकर रेडियो पर विविध-भारती सुनने के लिए भी किया करते थे।

दोपहर का भोजन करने के बाद अक्सर बच्चे थक जाते थे और थक कर सो जाते थे। शाम में उठकर यह फिर से विद्यालय प्रांगण में विविध प्रकार के खेल खेलने पहुंच जाते थे। गोधूलि बेला में पूरा प्रांगण बच्चों की उर्जा से और ऊर्जावान हो जाता था। कहीं फुटबॉल, तो कहीं वॉलीबॉल, कहीं खो-खो तो कहीं कबड्डी। हर कोई एक न एक खेल जरूर खेल रहा होता था। कई शिक्षक भी बच्चों के साथ इस खेल में कूद पड़ते थे। उनका उत्साह देखकर मन आह्लादित हो उठता था। फिर प्राचार्य महोदय लाउडस्पीकर पर गाना बजवाते थे और बच्चे - बच्चियां लाइन में लगकर भूंजे की प्रतीक्षा करते थे। कुछ बच्चे यहां भी डबलिंग मारने से चूकते नहीं थे। कुछ ने इस विधा में महारत हासिल कर लिया था।

1999 बैच के टॉपर्स

विद्यालय परिधान में छात्राएं

थोड़ा-बहुत फ्रेश होकर बच्चे अपने - अपने छात्रावास में सायं कालीन स्टडी पीरियड के लिए बैठ जाते थे। और, जब हाउस मास्टर राउंड पर आते थे तो काफी दिलचस्प दृश्य होता था। कुछ बच्चे पढ़ते नजर आते तो कुछ ऊंघते। कुछ गुफ्तगू करते तो कुछ विज्ञान के किताब में छिपाकर कॉमिक्स भी पढ़ते नजर आते। हाउस मास्टर की नजर से भले ही वे बच गए हों, पर मेरी नजर से कोई नहीं बच सका। रात्रि भोजन के बाद लाइट्स आउट का समय होता था और सभी एक दूसरे को शुभरात्रि कह कर अपने बिस्तर के अंधेरे में कहीं खो जाते थे - शायद अगली सुबह के इंतजार में, अगले पौ फटने तक। इस तरह हर दिन हमारा एक नया दिन, नया अनुभव होता था।

एक मनमोहक इंद्रधनुष

मैं तो एक वीरान प्रांगण हुआ करता था। कुछ खाली जमीन, कुछ पुराने मकान, कुछ पेड़ और एक सादगी भरा माहौल। लेकिन जैसे ही नए बच्चे-बच्चियों का दाखिला हुआ, मैं अपने आप को भरा-पूरा महसूस करने लगा। क्योंकि बच्चे मधुबनी जिला के सभी प्रखंडों से आए थे, उनके बोलचाल और व्यवहार में विविधता दिखना लाजमी था। मुझे तो हर बच्ची या बच्चा एक अलग परंपरा का प्रतीक नजर आता था। उनकी शारीरिक, मानसिक और वैचारिक विविधता मुझे एक खास पहचान देती थी।

विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते बच्चे - बच्चियां

मुझे अपने परिसर में हर तरह के बच्चे नजर आते। कोई छोटी कद का तो कोई अमिताभ बच्चन की परछाई। कोई बच्ची गोरी, तो कोई सांवली। किसी की जुल्फें लंबी तो किसी की छोटी। यह विविधता सिर्फ शारीरिक नहीं थी, विचारों और व्यवहारों में भी काफी अंतर नजर आता था। कुछ बच्चे बिल्कुल शांत और गंभीर, स्वामी विवेकानंद की याद दिलाते तो कुछ चुलबुले और नटखट, क्लास में भी शांति से नहीं बैठ पाते। कुछ बच्चे तो सिर्फ इसी ताक में रहते थे कि कब शरारत का मौका मिले। अब बात दूसरे बच्चों को भूत बनकर डराने की हो या कुछ और साथी इकट्ठा करके प्राचार्य कार्यालय के बाहर धरना देने की हो, मुझे शरारत के कई रंग देखने को मिलते थे। कुछ बच्चे तो बिल्कुल पढ़ाकू थे, सिर्फ किताबों में उलझे होते - चाहे कक्षा हो या छात्रावास। तो कुछ बच्चों को जैसे किताबों से एलर्जी थी। वे क्लास के समय तो बीमार होने का बहाना बनाते लेकिन जब फिल्म देखने की बारी आती तो उनकी सारी बीमारियां छूमंतर हो जाती। ज्यादातर बच्चे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने बहुत कम समय में संगीत, कला और नृत्य में दक्षता हासिल कर ली। जिस बच्चे को पहले दिन ठीक से अपना बेल्ट बांधना नहीं आता था, उसी बच्चे को मैंने मंच पर 'हम्मा-हम्मा' गीत पर काला चश्मा लगाकर डांस करते हुए देखा। क्या गजब का आत्मविश्वास दिखा मुझे!

यही नहीं, खेलकूद में भी अधिकतर बच्चे-बच्चियां काफी रुझान रखते थे। यहां तक कि शाम को अंधेरा होने के बावजूद वे मैदान छोड़कर

सपने, महत्वाकांक्षाएं और ऊंची उड़ानें

मैंने अपने परिसर में बच्चे-बच्चियों को बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करते और फिर यौवन की दहलीज पर क़दम रखते देखा है। अपनी ही उधेड़बुन में खोए उन्हें मीठे-मीठे सपने बुनते देखा है। देखा है उनको उन सपनों को संजोकर और सहेजकर रखते हुए। फुटबॉल ग्राउंड में जब एक अच्छी किक लगती और फुटबॉल आसमान की ओर छलांग लगाता, तो उस बच्चे में बड़ा होकर फुटबॉलर बनने का सपना मुझे साफ़-साफ़ दिखाई देता। कितना मासूम था ना वो सपना! संगीत कक्ष में जब संगीत शिक्षक गाने की तारीफ़ करते तो उस बच्ची के ज़ेहन में गायिका बनने का सपना परवान चढ़ने लगता । जिनकी कलाकृतियाँ अच्छी बनती थी, वो बड़ा होकर ख़ुद कॉमिक्स बनाने का सपना देखते।

शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर और आईएएस बनने का सपना तो ज्यादातर बच्चों में दिखता था। यहां तक कि एकाध बच्चे तो प्रधानमंत्री बनने का भी ख्वाब देखते थे। उनके उन मासूम सपनों को देखकर मुझे उन पर बहुत प्यार आता था। मैं जानता था कि उन्हें इस चीज़ की बहुत ज्यादा समझ नहीं है, लेकिन यह लालसा हमेशा बनी रही कि उन्हें एक अच्छे और सफल इंसान के रूप में देखूं।

धीरे-धीरे उन बच्चों को अपने सपनों की समझ होने लगी और मैंने उनके सपनों को महत्वाकांक्षाओं में तब्दील होते हुए बहुत क़रीब से देखा। इस लिहाज़ से उनके निर्णय भी बदलते रहे। कोई छात्र गणित में सबसे ज्यादा अंक आने के बावजूद आगे की पढ़ाई मानविकी (आर्ट्स) में करने का निर्णय लेता ताकि वह सिविल सेवा में शामिल हो सके तो दूसरा छात्र आईआईटी में प्रवेश करने के लिए गणित और विज्ञान पर ही अपना फ़ोकस बनाए रखता। कुछ तो ऐसे भी थे जिन्हें लगा कि विद्यालय परिसर के सामान्य वातावरण में उनकी बड़ी महत्वाकांक्षाएं पूरी नहीं हो पाएंगी और उन्होंने बोर्ड की परीक्षा होते ही विद्यालय छोड़ने का निर्णय लिया। उनका साथ छूटने से मुझे तात्कालिक दुःख तो हुआ, पर ख़ुशी भी हुई यह देखकर कि मेरे बच्चे अपने सपनों को साकार करने के लिए ऊंची छलांगें लगाने को तैयार हैं। मैंने मन ही मन ढेर सारा आशीर्वचन और शुभकामनाएं देकर उन्हें विदा किया, इस आशा और उम्मीद के साथ कि एक दिन वो अपने-अपने क्षेत्र में सफल होकर मेरे पास वापस लौटेंगे।

छात्रावास जाना पसंद नहीं करते थे। कला के क्षेत्र में भी कई मेधावी बच्चों को देखा जिन्होंने विद्यालय का नाम आगे बढ़ाया। स्पोर्ट्स क्लस्टर में हमारे बच्चे बच्चियों ने रीजनल और नेशनल लेवल पर मेडल जीतकर हम सभी का मान बढ़ाया। एकेडमिक्स में भी हमारे बच्चे अव्वल रहे। 1999 का साल मुझे याद है, जब पूरे नवोदय विद्यालय समिति में तीन में से दो नेशनल टॉपर्स हमारे विद्यालय से थे - एक विज्ञान में तो दूसरा मानविकी में। इन बच्चों की उपलब्धियां और उनके बहुआयामी रंग मुझे एक मनमोहक इंद्रधनुष होने का आभास कराते थे - जैसे उनके माध्यम से दुनिया के सारे रंग मुझमें समा गए हों।

पुनर्मिलन...A Grand Reunion

मेरे वर्षों की तपस्या आख़िरकर रंग लाई। किसी ने सच ही कहा है कि इंतज़ार की घड़ी लंबी तो ज़रूर होती है, पर इंतज़ार का फल उतना ही मीठा भी होता है। वो छोटे-छोटे पौधे, जिन्हें पानी और खाद देकर मैंने बड़ा किया था, अब फलदार वृक्ष बनकर मेरे प्रांगण में वापस लौटे हैं। उन्हें अपने-अपने जीवन में सफल और प्रफुल्लित देखकर मेरा मन ख़ुशी से झूम उठता है । एक माँ-बाप को इससे ज्यादा क्या चाहिए कि उनके बच्चे न सिर्फ़ अपने पैरों पर खड़े हों, बल्कि तमाम क्षेत्रों में उनका नाम रोशन भी करें। मेरे बच्चों ने सफलताओं का जो परचम लहराया है, उससे मेरा क़द भी काफ़ी बढ़ गया है। आज जब मैं उनके बीच के आपसी प्यार और भाईचारे को देखता हूँ तो मन आह्लादित हो उठता है और उससे भी ज्यादा संतुष्टि यह देखकर मिलती है कि इनमें से अधिकांश मेरे लिए और आगे आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ न कुछ योगदान करना चाहता हैं। मुझे गर्व है कि मैंने ऐसे एलुमनाई को जन्म दिया है !

यह सब देखकर ऐसा लगता है जैसे मेरी सारी मुरादें पूरी हो गयी हों।

I feel accomplished!

अनुराधा कुमारी
(1960) बैच-2010-15

नवोदय के चार सदन एक ही वृक्ष की चार डालियां

अगर नवोदय एक वृक्ष है तो उसके चार सदन - अरावली, नीलगिरी, शिवालिक और उदयगिरी उसकी चार अलग-अलग डालियां हैं। नवोदय के अलग-अलग सदन की परिकल्पना ही इसीलिए है कि आपसी प्रतिस्पर्धा के माध्यम के हर स्तर पर प्रतिभा को निखारा जाए। और बाद में परिसर से निकलने के बाद, हमारा सदन-पहचान कहीं न कहीं गौण हो जाता है। फिर बस नवोदयन होना ही हमें दूसरे नवोदयन से आत्मिक स्नेह की डोर से जोड़े रखता है। एक अलग सी मोहब्ब्त होती है नवोदय वालो को अपने-अपने सदन से । उनके लिए नवोदय प्रांगण अगर उनका गांव या बस्ती है तो उनका सदन उनके लिए उनका निवास! और हमारे सदन शिक्षक / शिक्षिका हमारे लिए माता-पिता समान होते हैंI इतना ही नहीं, सदन के हर एक सदस्य से हमारा एक अटूट रिश्ता होता है! जैसे एक वृक्ष की सभी टहनियों में होर लगी होती है कि उसपे ज्यादा फल लगे, ऐसा ही कुछ हमारे वृक्ष-रूपी नवोदय के उन चार डाल रूपी सदनों में भी होता है! जब भी कोई प्रतियोगिता आयोजित होती है, चाहे वो गणतंत्र-दिवस का परेड हो, हिंदी-दिवस का कार्यक्रम, खेल-कूद प्रतियोगिता या फिर नवोदय का अपना क्रिकेट प्रीमियर लीग, जिसे हम 'नवोदय प्रीमियर लीग' कहते हैं, यह जज्बा साफ़ दिखता है I हमारा वो फील्ड, जो सदाबहार स्टेडियम के नाम से प्रचलित है, हमारा इडेन गार्डन बन जाता है ।

हम सभी इसी होर में लगे रहते हैं कि हमारा सदन कैसे जीते और कैसे ये पुरस्कार / अवॉर्ड हमारे सदन के नाम हो जाए! हम उस क्षण प्रतियोगिता में अपने कक्षा के करीबी मित्र से भी भिड़ जाते हैं - सिर्फ अपनी मोहब्ब्त, अपने घर, अपने सदन के लिए! जब शाम की असेम्बली के वक़्त हम सब अपने अपने सदन का नीला, हरा, लाल, या पीला टी-शर्ट पहन कर फील्ड में निकलते हैं तो मानो अपने-आप में गौरवान्वित महसूस करते हैं और उस वक़्त अपने सदन को और अपने निवास-स्थल को अपने दिल के अत्यंत करीब महसूस करते हैं । यह वही सदन है, जहां हम एक-दूसरे के साथ कभी शरारत तो कभी खूब मस्ती किया करते थे, कभी हसीं-खुशी में समय गुजारते तो कभी किसी के दुख़ में एक-दूसरे का सहारा बन कर खड़े होते थे । यह वही जगह है, जहां हम कभी बाल्टी में पानी भरकर एक-दूसरे पे उड़ेला करते थे, तो कभी यूं मन- मौजियों की तरह प्लेट उंगलियों पर नचाते हुए टोली बनाकर मेस जाते थे। पर इन सबके बावजूद भी अगर कभी हमारे वृक्ष, हमारी बस्ती, हमारे मुहल्ले – नवोदय पे कोई संकट आती तो उसके सभी डाल यानी सभी सदन एकजुट दिखते थे ! सचमुच अद्भुत, अद्वितीय था वो वक़्त, वो नवोदय और वो हमारे सदन - अरावली, नीलगिरी, शिवालिक और उदयगिरी - हमारे विद्यालय रुपी वृक्ष के चार डाल ।

संपर्क का सुखद अहसास

Establishing the Connectivity

साक्षात्कार

श्री अरविन्द कुमार शुक्ल, पी.जी.टी. हिंदी

(मधुबनी नवोदय में कार्यकाल: 1990-1994)

प्रश्न : महोदय आपको विद्यालय छोड़े लगभग ढाई दशक अर्थात 25 वर्ष हो गए हैं। इतने लंबे अंतराल के बावजूद क्या आप विद्यालय और बच्चों के साथ संपर्क में हैं?

उत्तरः मैंने ज.न.वि. रांटी, मधुबनी में दिनांक 27.08.1990 से 30.07.1994 तक टी.जी.टी. (हिंदी) के पद पर कार्य किया। विद्यालय में पुनः जाने का संयोग तो नहीं बन पाया, परंतु मानस पटल पर आज भी विद्यालय की छवि ज्यों की त्यों अंकित है। उस समय के अधिकांश बच्चे आज भी संपर्क में हैं। उनसे यदा-कदा जब बात होती है, विद्यालय के स्मृतियां जीवंत हो उठती हैं।

प्रश्नः आपने इस संपर्क को किस प्रकार बनाए रखा? क्या यह संपर्क एक मजबूत बंधन को इंगित करता है?

उत्तरः मधुबनी विद्यालय मेरा प्रथम विद्यालय था। जब मैं वहां गया, उस समय जीवन का कोई अनुभव तो नहीं था, लेकिन आवासीय विद्यालय होने के कारण हमेशा बच्चों के साथ ही रहना होता था। इस प्रकार बच्चों के साथ उनके मित्र के रुप में भी घुलना-मिलना प्रारंभ किया। मुझे अब भी याद है जब मैं विद्यालय-परिसर में घूमता रहता था; कई बच्चे मेरे साथ हो जाते थे और निःसंकोच बातें किया करते थे। शायद बच्चों को विश्वास हो गया था कि मैं उनका अभिभावक हूं। समय की गति के साथ बच्चों से इतना भावात्मक लगाव हो गया था कि ग्रीष्मावकाश में घर जाने पर भी पत्राचार होता रहता था। सत्य तो यह है कि बच्चे तो स्वभाविक रूप से निश्छल होते हैं और सहज स्नेह के भूखे होते हैं। यह सहज स्नेह ही हम लोगों के अटूट बंधन का मुख्य कारण है।

प्रश्न . आज के इस तकनीकी युग में हर चीज के मायने बदल गए हैं - संबंधों के भी। आपके विचार में क्या बच्चे और शिक्षक अपने अन्योन्याश्रय संबंध को 21वीं सदी में भी उतना ही प्रगाढ़ रख सकते हैं?

उत्तरः यह सत्य है कि आज के मशीनी युग ने हम लोगों को भी मशीन बना दिया है। संवेदना समाप्तप्रायः है। जीवन-मूल्यों का द्रुतगति से क्षरण हो रहा है। पुरानी और नई पीढ़ी में परस्पर अविश्वास और अंतराल बढ़ता जा रहा है। हमारी नई पीढ़ी विद्रोही और आक्रामक होती जा रही है। किंतु आज के यांत्रिक युग में भी परस्पर मधुर संबंध बनाए रखे जा सकते है। हां, एतदर्थ हमें आशावादी दृष्टिकोण विकसित करना होगा और बच्चों में उनके शुभचिंतक होने का विश्वास जागृत करना होगा। यह विश्वास-सृजन मात्र नैतिक शिक्षा या निष्प्राण आदर्श वाक्यों से संभव नहीं है। इसके लिए विद्यालय के बच्चों को अपना ही बच्चा मानना होगा और दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन करना होगा। मेरा विश्वास है कि ऐसा करके हम आज के शुष्क तकनीकी युग में भी मधुर संबंध बना सकते हैं।

> प्रश्न. यदि आपको 90 के दशक में वापस जाने का मौका मिले तो किन चीजों को विद्यालय में वापस देखना चाहेंगे?
>
> उत्तरः यदि मुझे 90 के दशक में एक बार पुनः मधुबनी नवोदय विद्यालय में जाने का अवसर मिले तो मैं उन्हीं छात्र-छात्राओं के बीच रहना चाहूंगा, जिन अबोध बच्चों को 1994 में मैं अश्रुपूरित नेत्रों से छोड़ कर आया था और जो आज भी मेरे अंतर्मन में हैं। मेरा प्रयास होगा कि उन्हें रिक्तता के कारण उस समय जो नहीं दे पाया, अपने जीवन की समग्र पूंजी देकर धन्य कर लूँ ।

प्रश्न : नए शिक्षकों एवं बच्चों को क्या संदेश देना चाहेंगे ताकि उस 'संपर्क' (connectivity) को हमेशा जीवंत रखा जा सके?

उत्तरः जवाहर नवोदय विद्यालयों में अन्य शिक्षण संस्थानों की अपेक्षा शिक्षक का दायित्व बहुत बढ़ जाता है क्योंकि यहां शिक्षा प्रणाली अलग है। किशोरावस्था के बच्चे होते हैं, जो माता-पिता से दूर रहते हैं। अभिभावकों की ओर से उन पर कैरियर का दबाव रहता है। वे अपने मन की बात किसी और को बता नहीं पाते और कभी-कभी अवसाद का शिकार हो जाते हैं, जिससे प्रायः अप्रिय घटनाएं घटित हो जाती है। हम लोगों को भी उनकी बाल-सुलभ चपलता, अनुशासनहीनता लगती है, जिससे दुर्भावनाग्रस्त होकर उनसे बात करना ही बंद कर देते हैं। संवेदनहीनता के कारण परस्पर दूरी बढ़ती है, जो बच्चों में नकारात्मकता विकसित कर अनुशासनहीनता को जन्म देती है। मेरा नवागत शिक्षक बंधुओं से निवेदन है कि यद्यपि वातावरण निराशाजनक है फिर भी हमको आशावादी बनना पड़ेगा क्योंकि राष्ट्रनिर्माता हम लोगों को ही माना जाता है। हम लोग कभी बच्चों के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं हो सकते । उनके सुख-दुख के सहभागी बनकर संवाद अवश्य करते रहें, तभी परस्पर विश्वास और रागात्मक संबंध स्थापित हो सकता है। आज दबाव में जब अपना बच्चा विद्रोही बन जाता है, तब भय से हम विद्यालय के बच्चों को अपना कैसे बना सकते हैं? बच्चों को भी शिक्षकों को अपने माता-पिता मानकर उनकी बातों को मानना चाहिए तथा उनका सम्मान करना चाहिए। शिक्षकों को अपना परम हितैषी मानकर उन पर दृढ़विश्वास करना चाहिए। इतना ही कहना चाहूंगा। जय भारत! जय नवोदय!

(लेफ्टिनेंट कर्नल विनय कुमार झा (600) बैच – 1992-99 से बातचीत पर आधारित)

विद्यालय प्रांगण से

Treasure of Joy-Our Life

Aakriti Jha
(2621) Class: 12th

There is a knot everywhere,
In relationship,
In expression,
In gesture,
In acceptance,
In denial,
In all our emotions.
Yet we must blossom
With sweet smell and beauty
Without wall,
Without check,
Without stop,
Without resistance.
We are air and water and earth
And light and infinite space
All free to move,
Mingle and Dance,
Then why should we
Be caged and confined to opted cell?

बचपन

भवानी कुमारी
(2357), कक्षा – एकादश

बचपन का वो दौर जिसको
बीते जमाना हो गया ।
आज भी आँखों के सामने,
ऐसा छाया है जैसे
कल ही बीता हो वह नजारा।
ना किसी की परवाह थी
ना थी कोई आस,
फिर भी लगता था
हर कोई है आस–पास।
बचपन का वो लम्हा जो
गुजर–सा गया ।
मासूम नन्हीं–सी हथेली में
हजारों सपने बुनकर,
छोटी–सी मुस्कान, नन्हीं–सी जान
ना कोई मंजिल, ना कोई किनारा
फिर भी सब लगता था न्यारा–प्यारा।
पता नहीं कहाँ खो गया वो खजाना,
पाया था हमने जो बचपन में आशियाना,
जो कह दिया वही मान लिया,
ना देखा, ना जाना,
बस मन में ठान लिया ।
कोई बहाना ना था,
खुद ही थी मनचली,
इधर मन ने डाला डेरा,
उधर हुआ सवेरा।
बचपन में जवानी की आस थी,
पर जवानी में समय कहीं थम–सा गया ।
कहाँ थमा, पता नहीं,
बस मन में एक विश्वास है,
फिर से बचपन में जाने की आस है।

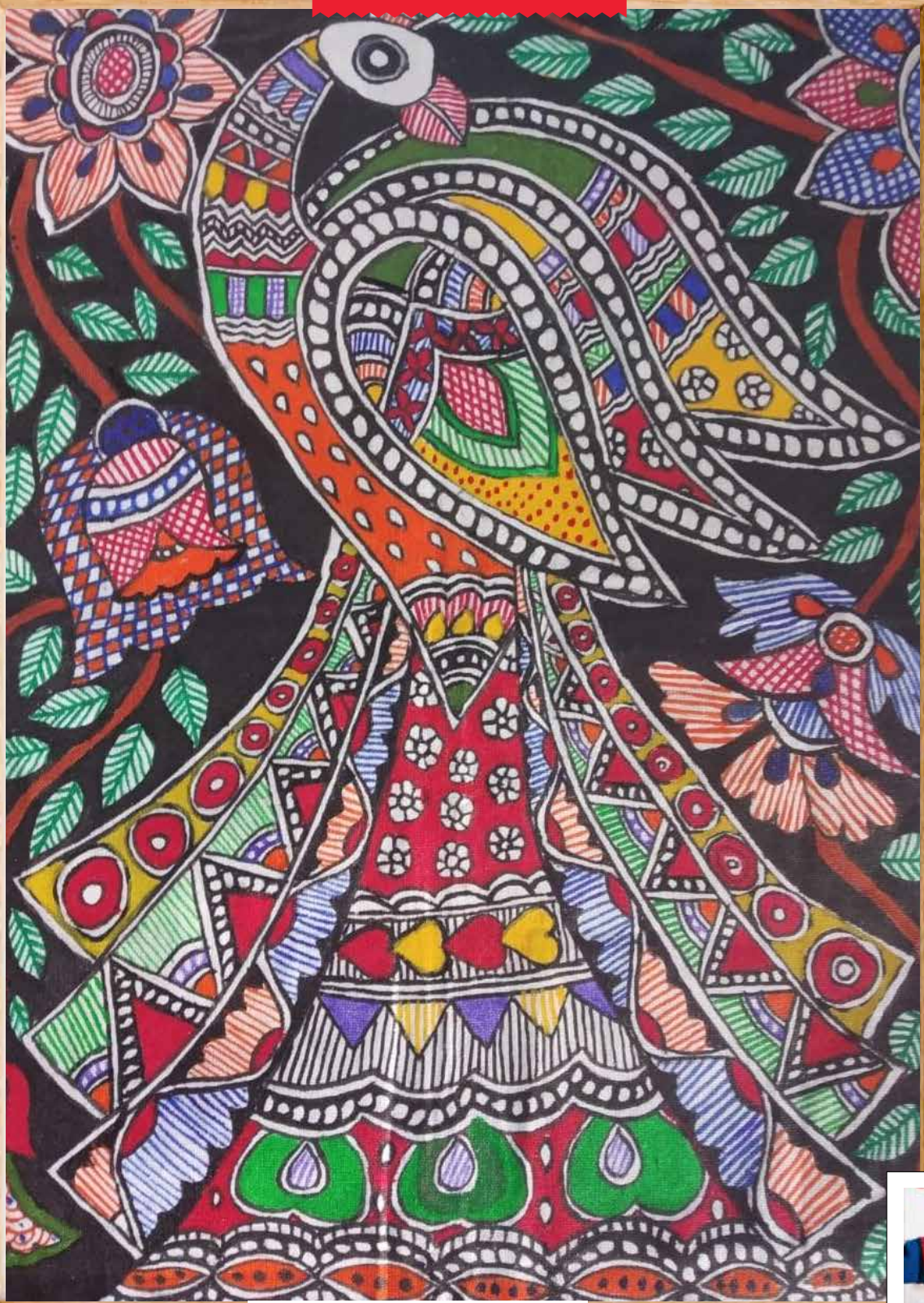

मोर वाटिका

भवानी कुमारी
(2283) बैच– 2014–2

विद्यालय प्रांगण से

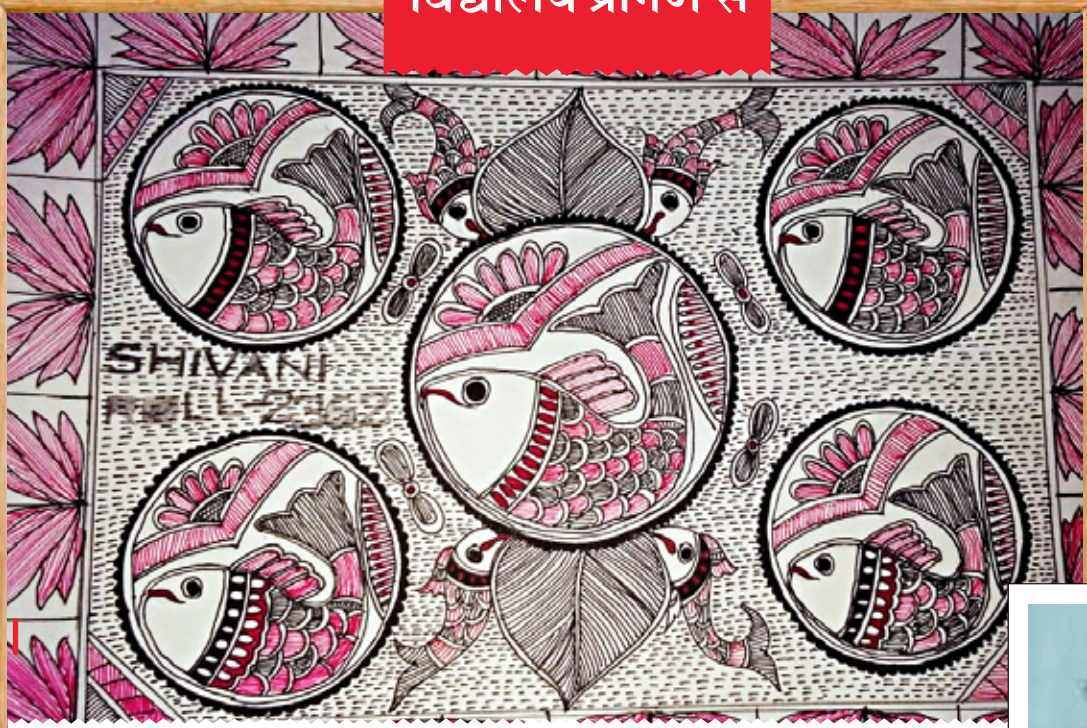

मत्स्य क्रीड़ा

शिवानी
(2362) कक्षा एकादश

एक और पुनर्जन्म

सुभाष कुमार
(2474), कक्षा – दशम

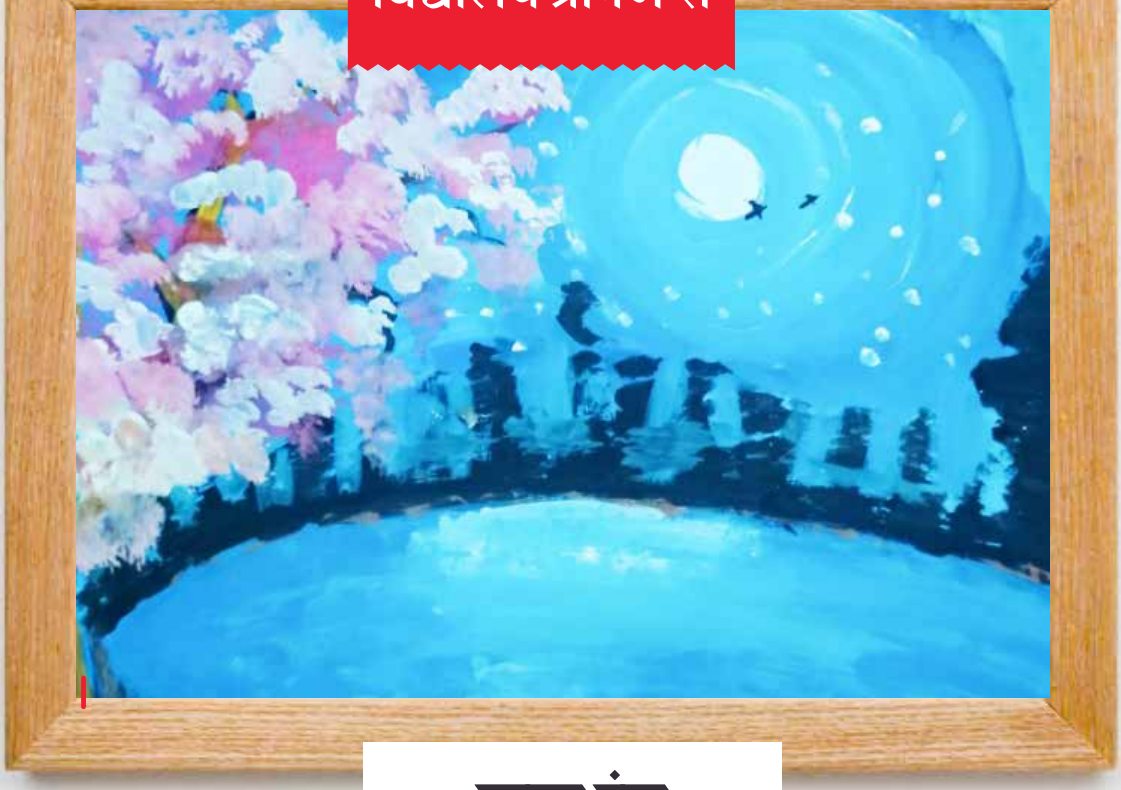

जल रंग

ज्योति कुमारी (2282),
कक्षा – द्वादश

विद्यालय प्रांगण से

विद्यालय में 15 अगस्त 2020 को 74 वें स्वतंत्रता दिवस का भव्य आयोजन

ब्रह्मकुमारी, स्वदर्शन भवन, लहरियागंज के द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेते हुए मुख्य प्रशासिका संगीता बहन, बीके बृजराज भाई, पूर्व प्राचार्य श्री त्रिपुरारी प्रसाद सिंह, उप प्राचार्य डॉ पी मिश्रा एवं छात्रगण

विद्यालय प्रांगण से

स्वच्छता जागरूकता अभियान में हाथों की स्वच्छता का संदेश देती छात्राएं।

पुस्तक सप्ताह के अंतर्गत छात्र/छात्राएँ पुस्तकालय में 'जीवनी संकलन' कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

15 AAMNA TIMES 2020

विद्यालय प्रांगण से

स्वच्छता अभियान सत्र में कला शिक्षक श्री अरविंद कुमार के द्वारा छात्रों को स्वच्छता की जानकारी देते हुए।

हिंदी पखवाडा – 2019 के अवसर पर छात्र/छात्राएँ 'पेंटिंग प्रतियोगिता' में भाग लेते हुए।

विद्यालय प्रांगण से

गणतंत्र दिवस-2020 के अवसर पर रंगोली बनाती हुई छात्राएं।

लोकप्रिय टीवी शो कौन बनेगा करोड़पति के स्टूडेंट्स स्पेशल वीक में नवोदय विद्यालय मधुबनी की कक्षा-8 की छात्रा दीक्षा कुमारी को महानायक आमिताभ बच्चन के साथ हॉट सीट पर बैठने का मौका मिला।

एलुमनाई की कलम से

जन्नत वाली कैंटीन

उस चाय – नाश्ते की कैंटीन पर,
गजब का याराना देखा...
झूमने वाला दीवाना देखा...
सीनियर के खाते पर, जूनियर को खाते देखा,
नाश्ता बनने से पहले नंबर लगते देखा,
पार्टी के नाम पर दोस्तों को खोजते–
जबरदस्ती का हर छोटा–बड़ा बहाना देखा...
नमकीन – नाश्ते में भी प्रेम के
मिठास को घुलते देखा,
यहाँ से जमते
उम्र भर साथ देने वाला याराना देखा...
नोक झोंक के बाद
कैंटीन में सुलह होने का
यहाँ जमाना देखा...
जन्नत – सा स्नेह का उन्नत
खजाना देखा...
उस चाय – नाश्ते के कैंटीन पर,
गजब का याराना देखा...

आशीष आनंद
(2243) बैच– 2013–20

एलुमनाई की कलम से

अमेरिका: मेरी यात्रा

कक्षा 6 में जब मैंने जवाहर नवोदय विद्यालय मधुबनी में एडमिशन लिया था, तब पढ़ाई में मेरी बहुत ज्यादा रुचि नहीं थी। इसका एक कारण था वहां मौजूद अन्य सुविधाएं, जिसमें मेरी रुचि ज्यादा थी, और दूसरा कारण था मेरे पिताजी का मेरे समक्ष ना होना। आवासीय विद्यालय होने के कारण पिताजी से मेरा मिलना सिर्फ़ छुट्टियों में या महीने के प्रथम रविवार को ही होता था, वो भी सिर्फ़ 1-2 घंटे के लिए । एक 'ठेलुआ' टाइप के विद्यार्थी के लिए माहौल में इतना बदलाव होना काफ़ी था- उसके उत्तम दर्जे से औसत दर्जे में तब्दील होने के लिए। कक्षा 7 में आते-आते मैं सचमुच औसत दर्जे का विद्यार्थी बनकर रह गया ।

कक्षा 10 में प्रवेश के बाद, जब जीवन का पहला बड़ा पड़ाव पार करने के लिए सिर्फ़ एक साल बचा था, उस समय तक मेरा दर्जा तो नहीं बदला था, लेकिन पढ़ाई को लेकर मेरा दृष्टिकोण जरूर बदल गया था। उसका एकमात्र कारण मेरे पिताजी थे। पढ़ाई का महत्व और पढ़ाई करके अपने और अपने परिवार के जीवन स्तर को कैसे सुधारा जाए, इसके कई उदाहरण पिताजी के पास थे और उनसे जब भी मुलाक़ात होती थी, हमें वो बस यही बताया करते थे। कक्षा 10 उत्तीर्ण होने के बाद मैं नवोदय विद्यालय में ही रहा और वहीं कक्षा 11 में दाख़िला लिया।

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में मैं अपने आपको सिर्फ़ गणित में ही प्रतियोगी मानता था क्योंकि गणित में मेरी रुचि बाकी लिए विषयों से ज्यादा थी। पिताजी चाहते थे कि मैं डॉक्टर बनूं, लेकिन मुझे अपना लक्ष्य गणित में ही दिख रहा था। इसलिए कक्षा 11 में गणित का ही चयन किया, बायोलॉजी का नहीं । लोग कहते हैं कभी भी दो नाव पे पाँव नहीं रखना चाहिए, शायद यही मेरे दिमाग़ में भी था । कुछ करने का मन में ठाने हुए मैंने किसी और दिशा में ज्यादा हाथ पैर नहीं मारा, अपितु सिर्फ़ एक लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ा - उन विषयों को लेकर, जिसमें मेरी ज्यादा रुचि थी ।

मेरी इस सोच में चार चांद तब लग गया, जब मेरा चयन स्कूल कैप्टन के लिए हुआ। एक साधारण विद्यार्थी से स्कूल कैप्टन बनना मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात थी और इसके लिए मैं सदा अपने शिक्षकों का आभारी रहूंगा। प्रतिनिधित्व करने की क्षमता मैंने यहीं से सीखी।

कक्षा 12 उत्तीर्ण होने के बाद मैं पटना आ गया। आईआईटी पास करने का लक्ष्य इतना आसान नहीं था मेरे लिए, जबकि मेरे कुछ मित्र अच्छी श्रेणी से उत्तीर्ण हो चुके थे। इसके चक्कर में मैंने बाक़ी परीक्षाओं को भी अनदेखा किया और अपना ज्यादा समय गणित और विज्ञान का स्तर ऊंचा करने में लगाया। ऐसा लगता था की अगर एक सप्ताह पढ़ाई छोड़ दी तो सारा कुछ भूल जाऊंगा। बहुत समय बीत चुका था और धैर्य का बांध भी टूट चुका था। इसलिए मैंने कोचीन विश्वविद्यालय में जाकर कम्प्यूटर साइंस में दाख़िला ले लिया, क्योंकि संयोगवश उस वर्ष मैंने इसकी प्रतियोगिता परीक्षा भी दी थी और अच्छा रैंक आ चुका था । शायद मेरा भाग्य यहां करवट ले रहा था, परन्तु मुझे इसका ज्ञान क़तई नहीं था क्योंकि मैं आईआईटी में चयन ना होने के ग़म में डूबा हुआ था। थोड़ा पछतावा भी था कि इतना समय मैंने क्यों बर्बाद किया, कहीं और भी कोशिश किया होता!

दक्षिण भारत जाकर अंग्रेज़ी बोलचाल की भाषा हो जाना बड़ी मेरे लिए उपलब्धि थी और आईटी इंजीनियर होने के कारण तीसरे साल के अंत तक मुझे एचसीएल में नौकरी मिल चुकी थी। आसमान में जाने का रास्ता दिख चुका था बस छूने की देरी थी। नौकरी बदली, चेन्नई से दिल्ली आया, ये सोचकर कि घर के नज़दीक आकर माता-पिता से मिलना थोड़ा जल्दी-जल्दी हो पाएगा। पर किसको पता था कि मैं अनजाने में अपने दूर जाने का रास्ता ढूंढ रहा था। नतीजन मैं आज अमेरिका में अपने माता-पिता से बहुत दूर, उनके स्वस्थ होने की कामना के साथ नौकरी कर रहा हूं।

रंजीत कुमार
(586) 1992-99

(रंजीत कुमार, क्रमांक-586, 1992-99 बैच से हैं। विद्यालय से पास आउट होने के बाद उन्होंने School of Engineering, Cochin University, Kerala से Computer Science & Engineering में B.Tech. किया । डिग्री हासिल करने के बाद पहले तीन साल उन्होंने HCL Technologies में Software Engineer के रूप में कार्य किया और 2010 से अब तक DXC Technology में USA में कार्यरत हैं। इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए उनसे संपर्क किया जा सकता है। फ़ोन : +1512-4159261, ईमेल : ranjeet586@gmail.com)

एलुमनाई की कलम से

संतोष कुमार
(592) बैच–1992–99

पत्रकारिता
मेरा सफर, मेरी कहानी

पत्रकारिता, यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां आपके अंदर कुछ करने और खबरों को सूंघने की बारीक क्षमता है तभी आप बेहतर नाम कमा सकते हैं। पत्रकारिता की जानकारी मुझे बिल्कुल नहीं थी । मैं भी दिल्ली आया था तो मन में वही ख्वाब था कि सिविल सर्विस करुंगा क्योंकि इतिहास विषय मेरा सबसे पसंदीदा और रुचि वाला था। लेकिन परिस्थितियों ने मुझे अपनी दिशा बदलने पर मजबूर किया। दरअसल दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान पहली बार मैंने मास मीडिया कोर्स की बात सुनी और आर्थिक तंगी ने मुझे इस करियर की तरफ मोड़ दिया। लेकिन एक बात जरुर थी कि इतिहास के साथ-साथ हिंदी विषय पर मेरी अच्छी पकड़ थी, जिससे मेरा झुकाव पत्रकारिता की ओर हुआ। जिंदगी के कुछ ऐसे अनुभव हैं जिसे मैंने अब तक अपने जेहन में ही दबा रखा है। लेकिन, अपने मित्रों की प्रेरणा कहिए या दबाव, पहली बार उस अनुभव को मैं अलग-अलग भागों में साझा कर रहा हूँ।

दिल्ली में सीधे नॉर्थ कैंपस की पकड़ी राह

जब मैं 1999 में दिल्ली आया तो मधुबनी और बेगुसराय के अलावा पटना तक नहीं देखा था। निर्णय बहुत अचानक हुआ। बेगुसराय नवोदय में रहते हुए मुझसे दो बैच सीनियर बिनोद भैया मिलने आए। उनकी बातों ने मेरे बीएचयू जाने की योजना को बदल दिया। बीएचयू जाने की एक बड़ी वजह थी– पैसा, क्योंकि वहां कम खर्चे में ग्रेजुएशन की पढ़ाई संभव थी। लेकिन विनोद भैया ने समझाया कि महज 1800 रु. में तुम दिल्ली में भी ग्रेजुएशन कर सकते हो। जब मैंने अपने पिताजी से चर्चा की तो आर्थिक रुप से सक्षम नहीं होते हुए भी उन्होंने हामी भर दी। पहली बार गांव के फ्रीडम फाइटर दादा जी के साथ दिल्ली पहुंचा, जहां झुग्गी बस्ती में मेरे दूर के चचेरे मामाजी रहते थे। महज एक छोटे से कमरे में पांच लोग रहते थे और नित्य क्रिया और नहाने-धोने के लिए सुलभ शौचालय ही ठिकाना था। मामा जी ने अपने एक खास व्यक्ति को मेरे साथ लगाकर नॉर्थ कैंपस के लिए रवाना किया, क्योंकि 12वीं क्लास में नंबर इतने मिले थे कि नॉर्थ कैंपस के कॉलेज में दाखिला होने का पूरा भरोसा था। आर्टस् में उस समय 75 फीसदी नंबर लाना आसान नहीं था, लेकिन बेगूसराय नवोदय में रहते हुए अपने विषय पर अच्छी समझ के चलते ऐसा संभव हो पाया। हालाँकि अंग्रेजी के कम नंबर की वजह से हिंदू कॉलेज में दाखिला नहीं हुआ, लेकिन किरोड़ीमल कॉलेज में आसानी से हो गया।

समाज कल्याण विभाग के हॉस्टल में जीवन

कॉलेज का हॉस्टल भी मिलना संभव हो रहा था, लेकिन पैसे की समस्या ने मुझे रोक दिया। तभी जानकारी मिली कि दिल्ली सरकार की ओर से समाज कल्याण विभाग के छात्रों के लिए एक हॉस्टल दिलशाद गार्डन में चलता है, जो पूरी तरह से मुफ्त है। पिताजी उसी के लिए अड़ गए, जबकि मेरी दिली इच्छा कैंपस में रहते हुए सिविल सर्विस की ओर जाना था। उस सरकारी हॉस्टल में दाखिला लेने के लिए भी पिताजी ने अच्छी खासी मेहनत की और बेहद मुश्किल से वहां एडमिशन हो गया। लेकिन परेशानी कम नहीं हुई। हॉस्टल से सुबह निकलना और देर शाम कॉलेज से लौटना। दिन में खाने की समस्या बनी रही। एनसीसी से मिले कूपन से सप्ताह में एक दिन ही कैंटीन जा पाता था। बांकी दिन लंच क्या होता है, यह भूल गया था। खैर, कॉलेज का हॉस्टल नहीं मिला तो पिताजी से नाराजगी भी हुई, एक साल तक पत्र व्यवहार चला और धीरे-धीरे खर्च के लिए मिलने वाले थोड़े-बहुत पैसे भी बंद। सिर्फ साल में कॉलेजी की फीस भरने वक्त पैसे मिलते थे, वो भी कर्ज लेकर या जमीन बेचकर। वजह नाराजगी नहीं, आर्थिक परिस्थिति थी। पिताजी ने दिल्ली भेजने में हौसला तो दिखाया था लेकिन सक्षम नहीं थे। पहनने के लिए कपड़ों की समस्या थी। कई बार ऐसा हुआ जब नहाने को साबुन तक नहीं होते थे। मेरे एक खास दोस्त ने हॉस्टल आकर कई बार समस्या का समाधान किया। कई बार बीमार पड़ा तो दवाई

प्रधानमंत्री द्वारा पत्रकारिता क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ रामनाथ गोयनका राष्ट्रीय पुरस्कार 2016 से सम्मानित किया गया।

के लिए मोहताज होना पड़ता था। यह ऐसा समय था जब मेरी परिस्थिति का अहसास मेरे पहनावे और रहन-सहन से दिखने लगा था और कॉलेज की एक प्रोफेसर श्रीमती सहाना भट्टाचार्य ने इसे महसूस कर लिया। उन्होंने कॉलेज में फीस माफ होने की बात बताई। फिर क्या था, तीनों साल मैंने ब्लॉक से आय प्रमाण पत्र बनावकर कॉलेज से लगभग पूरी फीस माफ करवाई और जो पैसे वापस मिलते थे उससे साल भर का जीवन-यापन होता था। छुट्टियों में घर जाने के लिए रेलवे रियायत फॉर्म कॉलेज से लेकर और घंटों लाइन में लगकर टिकट लेता था।

आर्थिक स्थिति ने बदली दिशा

वैसे तो सिविल सर्विस का सपना लेकर दिल्ली पहुंचा था, लेकिन पहली बार लगा कि किस्मत का भी योगदान आपके जीवन में होता है। आर्थिक तंगहाली ने मुझे यह अहसास करा दिया था कि ग्रेजुएशन भी पूरा होना संभव नहीं है। एकबारगी दिल्ली से वापसी की तैयारी हो चुकी थी, लेकिन उस अजीज मित्र ने काफी समझाया। उसके बाद मैंने समझ लिया कि पोस्ट ग्रेजुएशन करना अब संभव नहीं हो पाएगा और मुझे तत्काल अपने लिए जॉब ढूंढनी होगी। ऐसे में मेरे सामने दो विकल्प आए – बी.एड. कर टीचिंग लाइन में जाऊं या फिर मास मीडिया का कोर्स करुं। बी.एड. की परीक्षा दी, लेकिन चयन नहीं हुआ। फिर मास मीडिया के लिए तीन जगह अप्लाई किया, इंटरव्यू तक पहुंचा, लेकिन यहां भी किस्मत को शायद मेरी सफलता मंजूर नहीं थी। तभी दिल्ली हिंदी अकादमी में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय की एक शाखा शुरु हुई। जानकारी मिली तो वहां सभी 40 सीटें भर चुकी थी। काफी प्रयासों से करीब तीन महीने बाद एक सीट अतिरिक्त के तौर पर बढ़ाई गई। लेकिन फिर फीस की समस्या थी। मैंने उस वक्त एलआईसी का काम शुरु किया, एजेंट बन गया। करीब तीन-चार पॉलिसी की और उसके कमीशन के साथ कुछ मित्रों से उधार लेकर फीस भरी। एलआईसी का काम संपर्कों की कमी की वजह से सफल नहीं हो पाया। उसके बाद मैं सीधा घर गया और पिताजी से बात की और फिर कर्ज लेकर उन्होंने कुछ पैसे दिए। उसके बाद पत्रकारिता में दाखिला तो हो गया, लेकिन करीब 3-4 महीनों का कोर्स छूट चुका था। जब पहली बार क्लास में पहुंचा तो बाकी के छात्र ऐसे देख रहे थे मानो मैं किसी दूसरी दूनिया से आया हूँ। खैर, एक कर्मचारी की मदद से एक छात्र तक पहुंचा और उसने मुझे सारे नोट्स दिए। मैंने अपने खर्च को चलाने के लिए विनोद भैया की मदद से एक एनजीओ में पार्ट टाइम जॉब शुरु कर दिया, जहां मुझे उस वक्त सप्ताह में तीन दिन काम के लिए 3000 रु. मिलते थे, जिससे रेगुलर क्लास भी संभव नहीं हो पा रहा था। लेकिन पत्रकारिता में आने की ललक और जल्द जॉब पाने की जिद ने मुझे नई ऊर्जा दी। नतीजा यह रहा कि 58 फीसदी नंबरों के साथ मेरा पीजी डिप्लोमा इन मीडिया का कोर्स पूरा हो गया।

इंटर्न (प्रशिक्षु) से नौकरी की शुरुआत

कोर्स पूरा हुआ, लेकिन पत्रकारिता में नौकरी कहां मिलेगी - यह यक्ष प्रश्न था। मीडिया में अमूमन यह होता है (जिसे बाद में साक्षात महसूस किया) कि नौकरी देने वाला आपको जानता हो या फिर कोई मजबूत सिफारिश हो। मीडिया क्लास में एक मैडम आती थीं - अरुणा सिंह। उन्होंने मुझे और तीन अन्य को इंटर्न कराने में अहम भूमिका निभाई। पहले मैंने अमर उजाला, फिर यूनीवार्ता न्यूज एजेंसी और बाद में दैनिक नवज्योति अखबार में इंटर्नशिप की। यह समय था, जब अटल बिहारी वाजपेयी पीएम थे और देश 2003 के विधानसभा और 2004 के लोकसभा चुनाव की ओर अग्रसर था। इंटर्न में दैनिक नवज्योति के ब्यूरो चीफ ने आखिरी दिन बायोडाटा मांग लिया और उन्होंने इंटर्न के दौरान मेरी क्षमता को देखते हुए कहीं नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया। कुछ दिन बाद ही मेरी मित्र (जो अब मेरी पत्नी हैं), जिसके पास मोबाइल हुआ करता था, के मार्फद संदेश आया। मैं मिलने पहुंचा तो उन्होंने कहा - क्या तुम मेरे साथ नौकरी करोगे? उम्मीद से ज्यादा 5000 रु. दूंगा और 300 रु. मोबाइल के लिए, लेकिन हां इसमें से 5 फीसदी टीडीएस कटेगा। तुम कुछ दिन सोच लो और फिर मुझे बताओ। मैंने उन्हें जवाब दिया - सर मुझे खुद ही निर्णय लेना है इसलिए

मुझे सोचने के लिए वक्त नहीं चाहिए। मैं तैयार हूं। फौरन फॉर्म भरवाया और पहले दिन ही रिपोर्टिंग के लिए बीजेपी और कांग्रेस के राष्ट्रीय कार्यालय की ओर रवाना कर दिया। हाथ में मोबाइल नहीं, कोई यातायात का साधन नहीं। पैदल ही निकला और शाम को आते ही रिपोर्ट लिखी। मेरी शुरुआत ऐसी रही कि सभी राजनैतिक पार्टियों में मेरा जाना होता था जिसका असर मेरी लेखनी और सोच पर भी पड़ा। मैंने न्यूट्रल जर्नलिज्म को वहीं से अपने भीतर बसाया। चूंकि उस वक्त विधानसभा चुनाव शुरु हो चुके थे और मेरा पेपर राजस्थान से जुड़ा था तो काम में रात होना लाजिमी था। नौकरी के दूसरे महीने में ऑफिस ने मोबाइल लेने का दबाव बना दिया, लेकिन पैसा नहीं था तो अपनी मित्र (अब पत्नी) से उधार लेकर मोबाइल लिया। लेकिन नौकरी की शुरुआत में मुश्किल होनी ही थी। उस ब्यूरो में मैं अकेला रिपोर्टर था और सभी पार्टियों को कवर करने की जिम्मेदारी मुझ पर ही थी। 5-6 किलोमीटर के दायरे में पैदल ही जाना होता था। खाने की फुर्सत नहीं मिलती थी। ऊपर से बॉस ऐसे थे कि छह महीने में लगा कि नौकरी छोड़ दूं। यहां तक कि 2005 में जब मेरी शादी हुई तो उन्होंने एक सप्ताह से अधिक की छुट्टी देने से मना कर दिया। लेकिन पत्रकारों के बीच मेरे बॉस की छवि ऐसी थी कि लोग कहते थे उनके साथ कोई 6 महीने से ज्यादा नहीं टिकता। मेरे मन में आया कि ऐसा क्या है जो कोई नहीं टिकता। मैंने अपने काम पर फोकस किया और फरवरी 2007 में जब तक वो नवज्योति में रहे, मैं वहीं रहा।

नवज्योति के कर्ताधर्ता (मालिक) ने मुझे वह जिम्मेदारी सौंपी जो मेरे लिए असंभव था। यानी डेली एक कॉलम लिखना जो उस अखबार के रीढ़ की हड्डी थी। यह शब्द संस्थान के मालिक का ही है। मैंने मना किया, लेकिन संस्थान की ओर से तमाम लीगल पहलुओं की पड़ताल के बाद मुझे ही लिखने को कहा गया। पहले दिन जब मैंने कॉलम लिखा तो अंदर से इतना हिला हुआ, डरा हुआ था कि अपना नाम लिखने से मना कर दिया। लेकिन डर में लिया गया मेरा निर्णय संस्थान के लिए अगले 5 महीने के लिए पॉलिसी बन गया। पाठकों को यह लगा ही नहीं कि इंडिया गेट से नाम का कॉलम कोई और व्यक्ति लिख रहा है। बॉस के साथ कॉलम को लिखते वक्त बेहद बारीकी से देखने का अनुभव मुझे फायदा कर गया। वे जहां गए वहां उन्होंने दूसरा कॉलम शुरु किया, लेकिन नवज्योति के कॉलम की धमक कभी कमजोर नहीं हुई। इसका सीधा लाभ मुझे मिला और कुछ महीनो बाद संस्थान ने मेरे इनकार के बावजूद जबरन ब्यूरो चीफ की जिम्मेदारी सौंप दी। इतने कम उम्र में ऐसी जिम्मेदारी मेरे करियर में बाधक हो सकती थी, इसलिए मैंने जिम्मेदारी संभाली लेकिन उसे सार्वजनिक नहीं

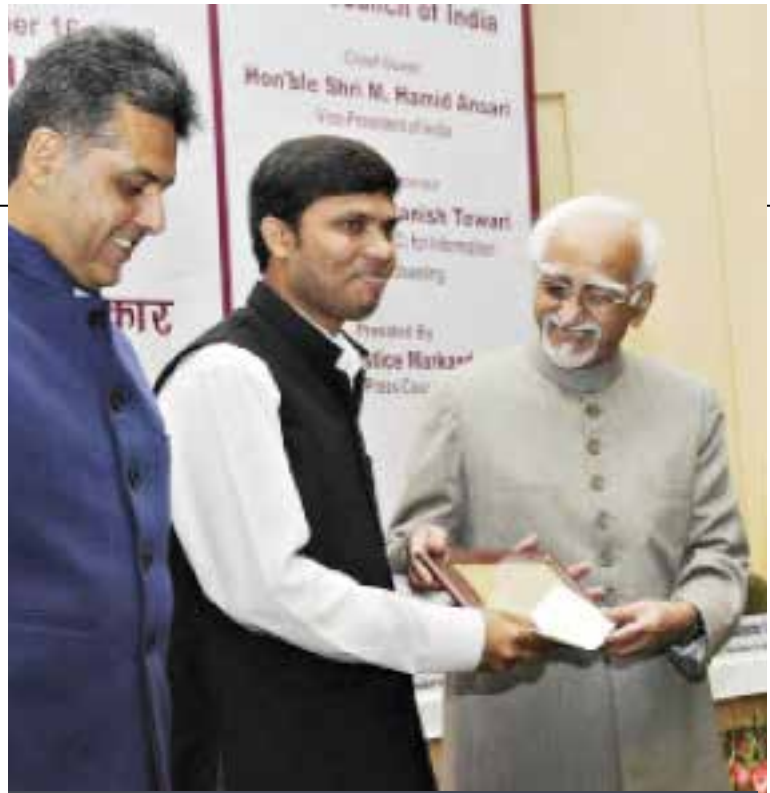

नेशनल प्रेस डे- 2013 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति एम. हामिद अंसारी के हाथों प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के सर्वश्रेष्ठ राजा राममोहन राय पुरस्कार से विज्ञान भवन में सम्मानित।

किया। यह एक ऐसा समय था

जब मेरे करियर में आर्थिक तौर पर भी 300 फीसदी का ग्रोथ हुआ। उसके बाद रोजाना कॉलम लिखने की चुनौती एक पत्रकार ही समझ सकता है। मैं रोजाना राजनैतिक इतिहास की किताबें पढ़ता था और बुजुर्ग-अनुभवी पत्रकारों से संवाद करता था, जो मेरे कॉलम को धारदार बनाता था। बाद में मुझे पता चला कि कॉलम इतनी धारदार और न्यूट्रल था कि लोगों को लगता था कि लिखने वाला कम से कम 40-50 साल की उम्र का व्यक्ति होगा। जोधपुर के मेहरानगढ़ किला ट्रस्ट की ओर से मेरे कॉलम के लिए मुझे बुलाकर पुरस्कार और सम्मान दिया गया। मैंने इस संस्थान में अप्रैल 2011 तक काम किया। जब दूसरे संस्थान जाने लगा तो नवज्योति की ओर से एनओसी देने से मना कर दिया गया। फिर मुझे जिम्मेदारी दी गई कि अपने जैसा कोई व्यक्ति ढूंढ़ कर दें तभी एनओसी मिल पाएगा। आखिर एक खुशनुमा माहौल में मैंने रीजनल अखबार से नेशनल लेवल के मीडिया जगत में प्रवेश किया।

इंडिया टुडे का स्वर्णिम काल

राष्ट्रीय पत्रिका इंडिया टुडे से मुझे बायोडाटा भेजने को कहा गया। तब एम.जे. अकबर, वहां के एडिटोरियल डायरेक्टर हुआ करते थे। मेरा इंटरव्यू हुआ और चयन भी हो गया। मैं दुविधा में था कि एक ब्यूरो चीफ की नौकरी छोड़कर वहां जाऊं या नहीं। लेकिन उम्र को देखते हुए चैलेंज को स्वीकार करने की इच्छा तीव्र हुई। जब वहां पहुंचा तो पहली चुनौती अंग्रेजी की वजह से हुई। स्टोरी का आइडिया अंग्रेजी में देना होता था और मैगजीन का फ्लेवर अखबारों से बिल्कुल ही अलग था।

लेकिन मेरी शुरुआती चुनौती नए माहौल में खुद को ढ़ालने की थी। शुरुआत के छह महीने बेहद मुश्किल भरा रहा। कई बार ऐसा लगा यहां काम करना संभव नहीं हो पाएगा। लेकिन नित नई चुनौतियों का सामना करने की आदत ने संबल दिया। उसके बाद जब रफ्तार पकड़ी तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। लगातार ऐसी-ऐसी स्टोरीज की, जिससे मेरी पहचान भाजपा और संघ परिवार कवर करने वाले विशेषज्ञ के तौर पर बनने लगी। इंडिया टुडे में राजनीति के अलावा सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दे पर काम करने का मौका मिला। इंडिया टुडे में रहते हुए जितनी भी स्टोरी लिखी, उसमें खुद को शून्य पर ले जाता था और पूरी पड़ताल करता था, जिससे हमेशा सीखने को मिलता था। इसी दौरान 2012 में इंडिया टुडे के लिए एक कवर स्टोरी थी जो भारतीय मुसलमानों की दुर्दशा पर थी, जिसने काफी हलचल मचाई। इस स्टोरी को प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) ने नेशनल अवार्ड के लिए चुना। मेरे लिए अभूतपूर्व खुशी की बात थी क्योंकि "राजा राममोहन राय अवार्ड" के पहले पुरस्कार के लिए मेरी स्टोरी को चुना गया था। विज्ञान भवन में तत्कालीन उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने मुझे सम्मानित किया। साथ ही ऑल इंडिया माइनॉरिटी फोरम ने मध्य प्रदेश के विदिशा में आयोजित एक समारोह में 'शान-ए-शहाफत' (Pride of Journalism) के खिताब से नवाजा। इसके बाद 2015 की मेरी एक स्टोरी, जो भाजपा के सदस्यता अभियान की पोल खोलने वाली थी, ने यह साबित किया कि भाजपा ने 11 करोड़ सदस्य बनाने का दावा किया, लेकिन वह जमीन पर महज 40 लाख लोगों तक पहुंच पाई थी। इस स्टोरी के बाद भाजपा ने अपना अभियान बंद कर दिया। इस स्टोरी को देश के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार "रामनाथ गोयनका राष्ट्रीय खोजी पत्रकारिता" के लिए चुना गया। यह अवॉर्ड प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों 2016 में मिला। हालांकि इस स्टोरी के लिए मुझे 2015 से लगातार राजनैतिक तौर पर काफी विरोध का सामना करना पड़ा, जिसका खुलासा करना पत्रकारिता के मूल्यों के लिए उचित नहीं होगा। लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। कई बार राजनीति के शीर्ष स्तर से इंडिया टुडे संस्थान को शिकायतें मिलीं। लेकिन संस्थान ने मुझे अपना काम करने की खुली छूट हमेशा दी, जिससे मैं लगातार काम करता रहा। इंडिया टुडे वाकई मेरे लिए पत्रकारिता का स्वर्णिम काल रहा।

इसके बाद जिंदगी में ऊंचे मुकाम हासिल करने और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की इच्छा ने मुझे दैनिक भास्कर से आए उस ऑफर को मंजूर करने के लिए मजबूर कर दिया,जो मेरे लिए वाकई बेहद आकर्षक था। उसके बाद मैं भास्कर में डिप्टी एडिटर के रुप में काम शुरु किया और वहां की कुछ स्टोरी, खास तौर से भाजपा के 152 सांसदों के खिलाफ नाराजगी वाली रिपोर्ट, से हलचल मची और संस्थान में शिकायतें हुई। पत्रकारिता में इस तरह की चीजें तो आम है। लेकिन मेरा मानना है कि एक पत्रकार को अपना काम पूरी निष्ठा के साथ करते रहना चाहिए।

पत्रकारिता के क्षेत्र में मेरा कोई गॉडफादर नहीं था, मुकाम मेरे काम से बनता चला गया। अगर कोई पत्रकारिता के क्षेत्र में करियर बनाना चाहता है तो उसके लिए मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि आपके अंदर सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहने का जज्बा होना चाहिए। जो भी काम करें उसके पीछे ठोस आधार, तथ्य, सबूत हो तो शायद आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। लेकिन संघर्ष यहीं खत्म नहीं होता क्योंकि करियर की शुरुआत में संभावनाओं का क्षेत्र बड़ा था, लेकिन जैसे जैसे आगे बढ़ते जाते हैं, संभावनाओं का क्षेत्र सीमित हो जाता है। सो संघर्ष आज भी जारी है... इससे जूझना अब आदत सी हो गई है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि यह जज्बा मुझे अपने नवोदय परिवार से मिला है, जहां से मेरे जीवन में आत्मनिर्भर बनने का गुण खुद-ब-खुद समा गया। मैं हमेशा नवोदय का शुक्रगुजार रहूंगा, जिसने मुझे जिंदगी में कुछ कर गुजरने का साहस दिया।

(संतोष कुमार, क्रमांक – 592, 1992–99 बैच से हैं। मधुबनी नवोदय से दसवीं करने के बाद संतोष मानविकी (आर्ट्स) की पढाई के लिए बेगुसराय नवोदय चले गए। उन्होंने किरोड़ीमल महाविद्यालय से इतिहास में स्नातक किया और फिर पत्रकारिता की ओर रुखसत हुए। पत्रकारिता के छोटे से करियर में ही उन्हें 'राजा राम मोहन राय' और 'रामनाथ गोयनका' जैसे उत्कृष्ट पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। उनकी पहली किताब 'भारत कैसे हुआ मोदीमय' एक बेस्टसेलर साबित हुई है। बतौर लेखक और स्वतंत्र रूप से सलाहकार संपादक के तौर पर कार्यरत हैं।
इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए उनसे संपर्क किया जा सकता है। फ़ोन : 9891685369, ईमेल : santosh.indiagatese@gmail.com

एलुमनाई की कलम से

रजनीश रंजन
(782) बैच–1995–2002

सड़क से 'सरक' कर बेपटरी हो रही भाषा..

बिहार से हो क्या ?

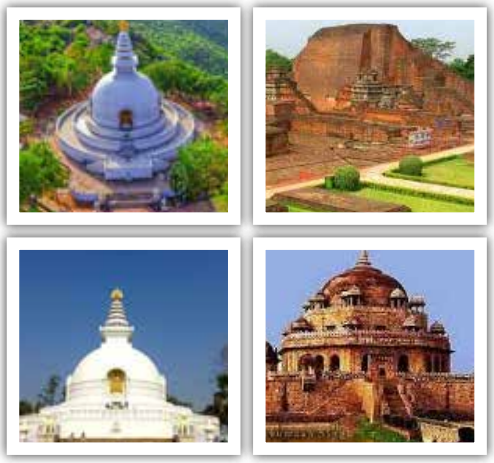

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल।' मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है। सिर्फ इतना ही नहीं, बिना अपनी भाषा के मन की पीड़ा को दूर करना भी मुमकिन नहीं है, लेकिन, क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में देशज पुट और अपभ्रंश शब्दों की भरमार होने से उनके उच्चारण में अक्सर अशुद्धता झलकती है, जो कभी अज्ञानता तो कभी हंसी का पात्र तक बना देती है। विद्वानों की सर्वसम्मत राय रही है कि जितना महत्व शुद्ध लिखने का है उससे कहीं ज़्यादा महत्व शुद्ध उच्चारण का है क्योंकि शब्दों का सही उच्चारण ही भाषा का स्वरूप गढ़ता है और बहुत हद तक उसकी समृद्धि और आभामण्डल तैयार करने में मदद करता है। उच्चारण पर बल न देने पर उच्चारण दोष उत्पन्न होता है और जिससे भाषा का रूप न सिर्फ व्याकरण के तौर पर बल्कि भावार्थ के धरातल पर भी विकृत हो जाता है और पूरी भाषा तद्भव के खूंटी पर टंगी दिखती है, जिसकी बड़ी साहित्यिक कीमत उसे चुकानी पड़ती है। यहां तक कि शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक भाषा प्रभावहीन सी हो जाती है और उसे जो दर्जा मिलना चाहिए था उससे वंचित हो जाती है

बिहार के लोगों की सबसे बड़ी समस्या उच्चारण की ही है। ज्यादातर लोग स, श और ष में भेद नहीं कर पाते हैं। यहां आम बोलचाल में 'श' का उच्चारण ज्यादातर लोग 'स' करते हैं। यहां भगवान शंकर भी संकर हैं, लिहाजा प्रभु की स्तुति के श्लोक भी स्लोक बन जाते हैं। 'र' और 'ड़' के उच्चारण की गलतियां तो सहज पहचान सरीखी हो गई हैं। आमतौर पर लोग लिखते सही हैं पर उच्चारण गलत करते वक्त ड़ को र बोलते हैं, जैसे - सड़क को सरक, घोड़ा को घोरा। 'घोरा सरक पर' तो टोंट का आम आधार हो गया है।

बिहारी भाइयों की गलती सिर्फ 'र' तक सिमटी नहीं है। 'व', 'ब' और 'भ' के उच्चारण में भी बिहार के लोग गलतियाँ करते हैं। जैसे वोटर को भोटर बोलते हैं तो वरदान को बरदान। वेरी गुड बन जाता है भेरी गुड। पीएम मोदी का 'विकास' भी बिहार में जाकर 'बिकास' बन जाता है। पूर्वी यूपी में बनारस के आसपास तो लोगों का तर्जुमा और भी अलग है। यहां के लोग न 'वोट'

डालते न 'भोट', यहां लोग 'ओट' डालते हैं। यहां 'ओट' से लोकतंत्र भले मजबूत होता है लेकिन भाषा की सरेराह हत्या हो जाती है। नाक यहां भले सीधी हो लेकिन 'न' और 'ण' के उच्चारण में भी दोष साफ दिखता है – 'रावण' की जगह 'रावन' ले लेता है और 'रणभूमि' बन जाती है 'रनभूमि'।

((श - तालव्य 'श' भी कहा जाता है ,इसका उच्चारण तालु के स्थान से करना होता है।

स - दंत 'स' कहा जाता है, इसके उच्चारण में दांतो की मदद ली जाती है।

ष- मूर्धन्य 'ष' कहते हैं। इसका उच्चारण मूर्धा स्थान से है, जो तालु और दांत के बीच होता है))

कुछ भी कहें, स्थानीय बोली का पुट भाषा पर पड़ ही जाता है। लेकिन इसका पता हमें तब चलता है जब हम अपने राज्य से दूसरे राज्य में जाते हैं। 'दस कोस में पानी और बानी बदले की' कहावत सहज दिखने लगती है। दुखद यह है कि जैसे अशुद्ध पानी सेहत का बंटाधार कर देती है उसी तरह भाषा की अशुद्धि हमारे ज्ञान को। जब लोग टोकते हैं, तब हमें एहसास होता कि हम लिखते तो सही हैं, पर बोलते गलत। गलत पढ़कर गलत बोलने की आदत पड़ जाय, तो फिर छूटती नहीं। कुछ लोग अज्ञानवश वर्णों व शब्दों के सही रूप उच्चारित नहीं कर पाते हैं, जैसे आमदनी को आम्दनी या खींचने को खेंचना कहना। मेरा एक दोस्त कभी 'गलती' नहीं करता, वो हमेशा 'गल्ती' करता है ऐसा नहीं है कि ये उच्चारण दोष सिर्फ बिहारियों के साथ है। अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग उच्चारण दोष आपको दिख जाएंगे। जैसे, अंग्रेज 'त' नहीं बोल पाते हैं - वो 'त' को 'ट' ही बोलते हैं। वो 'तुम' की जगह 'टुम' ही बोलेंगे। हमें उच्चारण भेद को एक दोष के रूप में न देख, उसे भाषा की स्थानीय विशिष्टता के तौर पर स्वीकार करना चाहिए। किसी क्षेत्र-विशेष के सभी लोग स्वाभाविक तौर पर उसी उच्चारण के आदी होते हैं।

यदि हमें अपनी भाषा से, भारतीय भाषाओं से, भारतीय सभ्यता-संस्कृति से प्रेम है, तो हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम शुद्ध-शुद्ध बोलें, पूरे व्याकरण शुद्धता के साथ शब्दों का उच्चारण करें। अगर घर से ही हम अपने बच्चों को शब्दों का सही उच्चारण करना सिखाएं तो उच्चारण की गलतियां नहीं होंगी। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं में सही उच्चारण सिखाना शिक्षकों का कर्तव्य है। अतः शिक्षक का उच्चारण भी शुद्ध होना चाहिए। साथ ही उन्हें शुद्ध उच्चारण अभ्यास कराना भी आना चाहिए। लगन से निरंतर अभ्यास करने से शीघ्र ही उच्चारण शुद्ध होता जायेगा। शुद्ध लेखन के साथ शुद्ध उच्चारण ही हमारी भाषा की उन्नति का आधार भी है।

एलुमनाई की कलम से

आत्मदर्शन

दो पल रुक, आँखें मूँद
खुद में झाँक, खुद को आँक
शून्य से निकला ओंकार तू
जो कभी न ठहरे,उस काल की हुंकार तू।
वेदों में समाया दिव्य ज्ञान तू
सृष्टि का अनन्त वरदान तू।
क्रोध को अपना अस्त्र बना ले
शक्ति जगा,तूणीर सजा ले
आत्म-परिचय से अवगत हो ले
सव्यसाची तू अभ्यंकर तू ही
शम्भू प्रलयंकर, ब्रह्म तू ही,
सृजन अब कर दे
चक्रपाणि बन इतिहास तू रच दे।

ज्योति कुमारी (2149)
बैच : 2012-1920-21

Confidence is Beauty

"Confidence is beauty
Beauty is art
Art is performance
Performance is excellence
Excellence is responsibility
Responsibility is collectivism
Collectivism is accountability
Accountability is state-of-art
In turn
State-of-art is beauty
Beauty is confidence
And, Confidence is success.

Dr. Khushboo Singh
(1745)
Batch -2007-14

ALUMNI'S ART GALLERY

नितीश कुमार सिंह
(2162) बैच- 2012-19

कलाकार की कूची

The Old Man

Virat Kohali

Traditional Beauty

ANAHITA

ALUMNI'S ART GALLERY

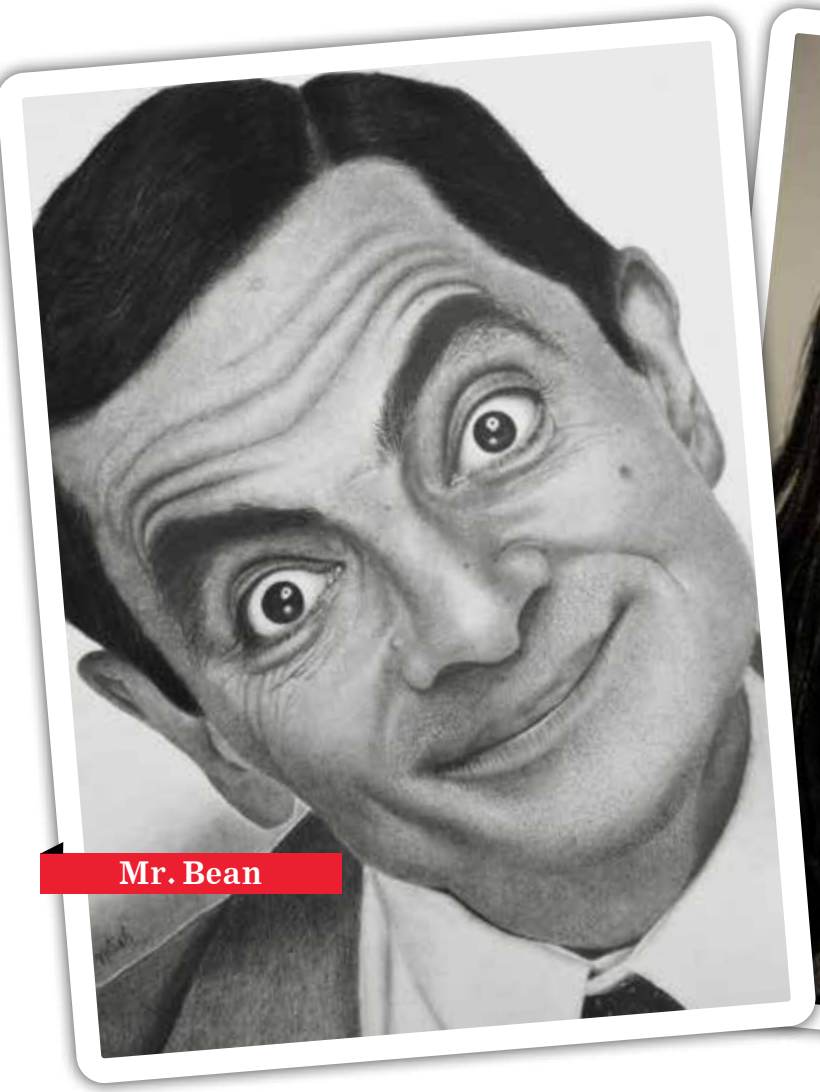

Mr. Bean

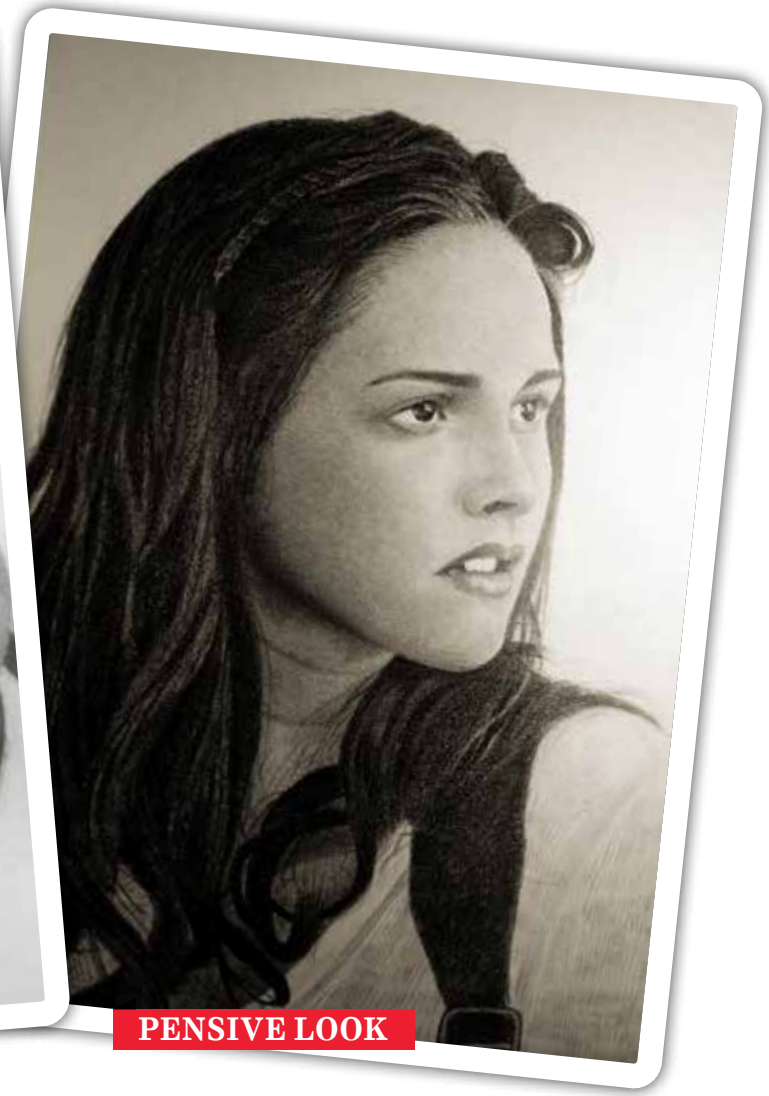

PENSIVE LOOK

अक्सर सोशल मीडिया से या किसी और माध्यम से मेरे आर्ट को देखकर, लोग मुझसे संपर्क करते हैं,मुझे आशीर्वाद देते हैं दो-ढाई साल पहले तक मैं खुद भी नहीं जानता था कि मैं आर्ट बना सकता हूँ। कभी कोशिश भी नहीं की थी। एक दिन मैंने अपने एक दोस्त को स्वामी विवेकानंद की तस्वीर बनाते देखा, जिसे देखकर मुझे लगा कि सम्भवतः मैं भी ये कर सकता हूं। उससे प्रेरित होकर मैंने भी स्केच बनाया। जब स्केच बनकर तैयार हुआ तो मेरे सामने ही मेरे कलाकार का वो रूप था, जिसे मैं तब तक नहीं खोज पाया था। उसके बाद मैंने निरंतर अपनी कला को निखारना शुरू किया,खुद के अभ्यास से ही आर्ट सीखता गया । मुझे पेंसिल से रीयलिस्टिक पोर्ट्रेट बनाना पसंद है। सोशल मीडिया का भी उपयोग मैं अपनी कला को संवारने में करता हूँ। हर रोज कुछ नया सीख अपने आर्ट में अप्लाई करने की कोशिश करता हूँ। मैंने अपने रचनात्मक कौशल को ही पेशे के तौर पर चुना है और अपने काम का लुत्फ़ उठाते हुए आगे बढ़ रहा हूं। मेरी ग़लतियाँ मेरे शिक्षक हैं, मेरे पेंसिल मेरे हथियार। मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है!

2021 Planner

संपर्क का सुखद अहसास
Establishing the Connectivity

जवाहर नवोदय विद्यालय, रांटी, मधुबनी

The United Voice of Alumni Association of Madhubani NavodayA

day:

month:

Note:

संपर्क का सुखद अहसास
Establishing the Connectivity

जवाहर नवोदय वि

The United Voice of Alumni As

2021

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

MAY

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

द्यालय, रांटी, मधुबनी

sociation of Madhubani NavodayA

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

JULY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

2021

एलुमनाई की कलम से

मैं नारी हूँ!

कभी अबला तो कभी सबला हूँ
कभी अनाथ और कभी सनाथ हूँ
मैं नारी हूँ!
कभी शांत तो कभी आतुर हूँ
कभी शांत नदी तो कभी उफान लेता समंदर हूँ
कभी निर्मल बहता झरना, कभी तपता ज्वालामुखी हूँ
मै नारी हूँ!
कभी सरस्वती तो कभी प्रचंड दुर्गा हूँ
कभी मैं बेनाम, तो कभी मेरे 108 नाम हैं
मै नारी हूँ!
कभी आभारी तो कभी स्वाभिमानी हूँ
कभी साहिल और कभी भंवर हूँ
मै नारी हूँ!
कभी माँ तो कभी बेटी हूँ
कभी बहन तो कभी अर्धांगिनी हूँ
हां मैं नारी हूँ!

अनुराधा कुमारी
(1960) बैच –2010–15

अग्रिम मानव

इनकी झूठी महफिल में
जबरन हंसना पड़ता है,
शान में कोई आंच न आए
उसे बचाना पड़ता है।
दांत निकाले खड़े रहकर
स्वयं को छलना पड़ता है,
दिखावे में कोई कमी न हो
मुस्कान भी रचना पड़ता है।
सभ्य जन कहलाते हैं ये
शान-ओ-शौकत पर कोई दाग नहीं,
चाहत से ज्यादा पास है इनके
कमी की कोई बात नहीं।
दरिद्रों को दान हैं देते
बड़े प्रतापी दिखते हैं,
पर नित दिन निज बगिया में
पौधे बिन पानी मरते हैं।
जीवन शैली यथार्थ नहीं
दिखावे में ये सच्चे हैं,
अपनों को हैं भूले बिसरे
गैरों से नाते अच्छे हैं।
सीमाहीन पाखंड है इनका
खुशियां इनकी स्वांग भरी,
इस युग के हैं ये अग्रिम मानव
पहुंच है इनकी हर कहीं।

शालिनी कुमारी
(2116) बैच –2012–19

एलुमनाई की कलम से

कैसा है श्रृंगार ?

मस्तक पर है चंद्र सुशोभित, और हाथ लाचार...
कैसा है श्रृंगार भारती ? कैसा है श्रृंगार ?
रजधानी में उत्सव मनता,
भूखी डूबी मरती जनता।
किसकी सुध औ' किसे पड़ी है ?
मरना है, मरने की घड़ी है।
एक अंग में चिता-भस्म है, एक अंग में हार,
कैसा है श्रृंगार भारती ? कैसा है श्रृंगार ?
हर मोड़ कौरवों से भरे हैं,
द्रोण-भीष्म सब मौन खड़े है।
द्रोपदियों को कैसे बचाएं ?
इतने कृष्ण कहाँ से लाएँ ?
नारी वाले देश में नारी की इज्जत पर वार,
कैसा है श्रृंगार भारती ? कैसा है श्रृंगार ?
जब समाज ने चाल रची है,
सिया अभागी कहाँ बची है!
देख रहे श्री राम मौन जब,
उन्हें रोकता बोल कौन तब!
लहु में भीगा आँचल तेरा, हो कैसे स्वीकार ?
कैसा है श्रृंगार भारती ? कैसा है श्रृंगार ?
हाथ पसारे चौराहों पर,
मिलता भारत हर राहों पर,
नग्न अवस्था , पेट पीठ है
भूख या भूखा कौन ढीठ है!
इनके आँसू का होता है, भावों से व्यापार
कैसा है श्रृंगार भारती ? कैसा है श्रृंगार ?

-उत्कर्ष आनन्द 'भारत'।
(DS-45) बैच-2006-11

एक खत नवोदय दोस्त के नाम

यारा, यारा, यारा
भेज रही हूं , तुम्हें प्यार ढेर सारा
याद आयी वो बचपन की घड़ियां,
जब संग था तू बनकर मेरा साया
याद है तुम्हें, क्लास ,मेस सारी जगहें
हम साथ साथ जाया करते थे
सिंगल बेड होते हुए भी, एक तकिए और रजाई में घुस,
साथ ही सो जाया करते थे
वो दिन बड़े ही खास थे, जब हम साथ-साथ थे
याद है तुम्हें जब हम मेस से खाना छुपा के हॉस्टल ले आया करते थे,
मैम से पकड़े जाने पर कितनी डांट खाया करते थे।
जब ना करता था दिल, क्लास जाने का,
एक बीमार तो दूसरा अटेंडेंट बन जाया करते थे।
उस दिन जब तूने मुझसे झगड़ा किया था,
याद है मुझे, बैठकर साथ, तू भी कितना रोया था।
सबकुछ अब बदल सा गया है, नए सांचे में ढल-सा गया है
पर यादें हमेशा याद आती है
बचपन की वो कहानियां भूले नहीं भूलती,
उन्हें याद कर नयी जिंदगानी आती है।
दोस्त अब और क्या-क्या लिखूं,
ज्यादा गहराई में गई तो किताबें लिख जाऊंगी,
लेकिन हमारे किस्सों का अंत नहीं कर पाऊंगी।
अपने शब्दों को विराम देते हुए बस इतना कहना चाहूंगी,
इंतजार करना! जल्द ही मिलने आऊंगी।।।

दीपा कुमारी
(1658) बैच 2006-11

एलुमनाई की कलम से

वो प्रांगण

वो प्रांगण, जैसे घर-आँगन।
बालपन की तरुण बेला,
दूर हो घर से, अकेला,
मृदुल कोंपल अधखिला मन,
को मिला बहु आयाम उपवन।
उसमें बसंत, उसमें सावन।
वो प्रांगण, जैसे घर-आँगन।

व्योम सी बगिया में विचरने,
खग ने खोले पंख अपने।
था अकेला, वृन्द है अब,
पिंजरे में भी पा लिया नभ।
बन्धन भी है वो, मनभावन।
वो प्रांगण जैसे घर-आँगन ।

ज्ञान और गरिमा का स्थल,
सींचता जीने का कौशल।
स्वप्न का साकार सृजन,
गुरुजनों का पथ प्रदर्शन।
उनसे ही है परिसर पावन।
वो प्रांगण जैसे घर-आँगन।

संगी-साथी स्नेह संबल,
बालपन का नेह निश्छल।
आज भी खुशियों की कुंजी,
स्मृति की जमा -पूँजी।
वो नींव सबल है आलम्बन।
वो प्रांगण, जैसे घर-आँगन।

वर्षा रानी
(841) बैच 1996–2003

जिंदगी से फिर

मुद्दतों बाद आज जिंदगी से
फिर से सवाल करने बैठा हूँ
क्या खोया, क्या पाया
कौन अपना, कौन पराया,
कितना हँसा, कितना रोया,
आज आँसुओं का हिसाब
करने बैठा हूँ,
जिंदगी से फिर .....

कभी सूखे, कभी हरे हुए
कभी निगाहों पर पहरे हुए
रातें गुजरती थी चाँद तारों में
आज ख़्वाब भी इकहरे हुए।
हाथों पर रख कर हाथ
मलाल करने बैठा हूँ
जिन्दगी से फिर .....

नदियाँ जो सूख जाती हैं
बहती जलधारा के बिना
रिश्तों में कसक कहाँ होती
एक अदद संवाद के बिना
वीणा भी धुन कहाँ निकालती
अपनी तार के बिना
तमाम उलाहनों के संग
दर पे उसके बवाल करने बैठा हूँ
जिन्दगी से फिर .....

मन की कई तहों के भीतर
रखी था असंख्य, जख्मों के बीज
जो फूट पड़े, हवा पानी पा कर
बुद्ध भी कह गए
संसार में दुःख है, और दुःख के कारण
उन्ही कारणों को हलाल करने बैठा हूँ
जिन्दगी फिर से...

राजनारायण पासवान
(338) बैच 1990–97

एलुमनाई की कलम से

नवोदय चले

निज गृह से सब मोह तोड़,
ममता के अश्रु को बहता छोड़
चल पड़े जनक के साथ-साथ
हाथों में बक्सा मन में विश्वास
था पता नहीं, जा कहाँ रहे?
था पता नहीं, क्या होगा रे?
चल पहुंचे मधुबनी स्टेशन
थी भीड़ बड़ी,था अश्रु नयन
स्टेशन से बाहर निकले
पिता संग नवोदय को चले
टेम्पू में चार-पाँच जन को ठूँस
ड्राइवर जा बैठा सब जान-बूझ
क्या करें साहब? कमाना है !
है बड़ा परिवार कमाना है !
होती है कुछ दिन ही कमाई,
नवोदय को जब यात्री आए
मिल जाता है मौका सरल
कर लेते हैं कमाई सकल
आपका भी खर्चा कम होगा
नित दिन आना नहीं होगा
एक-आध दिन की बात है
दे दो किराया जो बताया है
थोड़ा झिक-झिक, थोड़ा सा हर्ष
दे दिया किराया फिर रखा पर्स
इतने में टेम्पू स्टार्ट किया
गुमटी से आगे टेम्पू बढ़ा
रांटी गुजारा,गया जेलगेट
आ गया नवोदय का मेनगेट
कर के सड़क के एक ओर
ड्राईवर ने रोका टेम्पू को
एक एक कर जब हम उतरे
कितने पहले से ही थे पहुंचे
बात चली, चला परिचय का दौर
बोले पिताजी, चलू स्कूलक ओर
हम सब प्रशासन भवन की ओर चले
आँखों में अश्रु, मानस में सपना लिए
घर से बाहर एक घर था मिला
रिश्तों का नया उपवन था मिला
नवोदय से जुड़ा उस दिन रिश्ता
फिरब दला जीवन का किस्सा
जब-जब कोई नवोदय का मिला
मन का हर्ष आखों से है छलका
वो मधुर याद, वो मृदुल भाव
वो किशोर मन रिश्तों का छांव
उस प्रांगण का हर एक कण
बीता वहाँ का हर एक पल
याद बना कुछ ऐसा है
जीवन को जीवन जैसा है।

कुमार सुधीर आनन्द
(435) बैच 1991-98

एलुमनाई की कलम से

तुम्हारी तस्वीर : एक नज़्म

कभी जो बैठ जाता हूँ अकेले में ,
तुम्हारी किसी तस्वीर के साथ ।
ये सोच के कि चलो कुछ तकरीर की जाए ,
तुम न सही तुम्हारी तस्वीर ही सही ।
आँखे कमजोर हो चुकी हैं, तो शायद तुम्हारे
चेहरे की खूबसूरती बारीकी से न देख पाऊं ... लेकिन
हर एक उन्स का एहसास है ,
वो तो मेरी जागीर है ।
उसी के हवाले से तेरी तस्वीर में खोजता हूँ ,
वो जो मैंने महसूस किया था कभी तुम्हारे साथ ।
हाँ एक धुँधली सी, चमकदार चीज़ दिखाई पड़ती है ।
असल में चश्मा नहीं लगाया तो साफ नहीं देख पाया
लेकिन याददाश्त तो झकझोड़ के कह रही है ,
कि ये तेरे कानों का झुमका ही है ।
बड़े प्यार से उस झुमके ने मुझ से कहा , क्यों?
आखिर क्यों देख रहा है मुझे यूँ ,
मोहब्बत खींच लाई है ना तुझे ?
मत देख मुझे वरना फिर से मोहब्बत हो जाएगी ।
और ये दुनिया सारे इल्ज़ाम मुझ पर ही लगाएगी।

मोनू आनंद
(1610)बैच 2005-10

'देवी' पूजा कबूल करती!

यह आज की ही नहीं व्यथा,
वर्षों से चली आ रही प्रथा,
है हर रोज यहाँ नई- नई
'निर्भया' बना दिए जाने की कथा।
जमाना बदल गया, सोच बदल गई,
लेकिन अफसोस -
राक्षसी प्रवृति कभी नहीं बदल पाई,
एक निर्भया से उसकी हवस न मिटी ,
तो सामने दूसरी खड़ी कर दी गई।
एक अबला तो तभी मर जाती,
जब उसकी इज़्ज़त चिथड़ों में बिखेर दी जाती,
गलत कोई भी हो,
पर,गलती लड़की की ही गिनवाई जाती।
है करता जिस समाज में 'देवी' की पूजा पूरा देश ,
वहीं जो बेटी उड़ना चाहती -
उसके पंखों को क़तर दिया जाता,
तबाह कर तन,मन और जीवन
सड़कों के किनारे फेंक दिया जाता।
जहाँ पापियों को सजा दिलवाने के बदले
समाज के हाथों में मोमबत्तियाँ आ जाती,
क्या वहाँ 'पापनाशिनी'
अपनी पूजा कबूल भी कर पाती?
दूसरों पर अंगुली उठाने से पहले,
क्यों न अपने अंदर झाँका जाता ?
जो बनता है अपनी बहनों के लिए शेर,
वही दूसरों की बहनों के लिये क्यों जानवर बन जाता?
उम्मीद है लोगों की सोच जरूर बदलेगी,
याद रहे, जब कोई निर्भया नहीं मिलेगी,
उसी दिन से 'देवी' पूजा भी क़बूल करेगी।

प्रिया (2071)
बैच -2011-18

एलुमनाई की कलम से

बचपन: वर्तमान का सुख या भविष्य का बोझ

दादा के कंधों पर पलता है बचपन,
दादी के किस्सों से बुनता है बचपन,
जब टटोलता है,
पिता का हाथ,धतूरे का फल,
एक सा पाता है बचपन,
मनमौजी,लापरवाह, अल्हड़ सा बचपन,
हर चीज़ के लिए दूसरों पर निर्भर बचपन,
सही-गलत के फर्क से नासमझ बचपन,
वक्त के कायदे से बेखौफ़ बचपन,
हमेशा दिमाग में पालता अटपटा सवाल बचपन,
कुछ ऐसा हम सब का ख़ुशहाल बचपन।

पर,एक बचपन इससे अलग भी-
उजड़ा हुआ भूरा पड़ा बाल,
धूल मिट्टी में सना पक्का साँवला रंग,
तन पर कुछ चिथड़ा कपड़ा,
और हाथ में पीला पड़ा छोटा सा कटोरा,
घर की बड़ी जिम्मेदारी के आगे
छोटी पड़ती शर्म,
सड़क किनारे पंक्ति में बिठाता,
परिस्थिति बेरहम,
चीथड़ों में लिपटा फटेहाल ये बचपन,
दर - दर भटकता बेहाल ये बचपन,
जिसके वर्तमान का कोई ठिकाना नहीं,
और भविष्य के आगे लगा,
बड़ा सा सवाल का निशान।
बचपन ऐसा भी जो करता-
अपराध के रास्ते पर जाने को मजबूर,
परिस्थितियाँ ऐसी भी जो खुलवाती
जिस्म की दुकान।

हर इंसान का निर्माण करता है बचपन,
हमारे व्यक्तित्व को बनाता है हमारा बचपन,
दुनिया को जानने और समझने का
पहला अवसर है हमारा बचपन,
हम तो नए होते हैं इस दुनिया में,
न रीति- रिवाज, न समाज की समझ,
न संस्कार, संस्कृति,सभ्यता
और जटिल सामाजिक तंत्र का ज्ञान,
फिर हमें क्यों छोड़ दिया जाता है अकेले?
अज्ञेय के शेखर के अंदर उबाल मारते सवालों
पर,
क्यों नहीं जवाब देता है समाज?
जीना जीव को ही है और
बचपन से जवान होना जैविक प्रक्रिया,
फिर इस विषय पर बात करना क्यों है पाप?
जिसे जानने की जिज्ञासा ही,
साबित हो सकता एक अभिशाप।
यदि घर और स्कूल में ही
सही और गलत समझा दिया जाए
तो नहीं लेना पड़ेगा गलत जगह से
आधा- अधूरा ज्ञान,
और शायद कम बने ,
मासूम बच्चे से दरिंदा
जो नोंच लेता किसी चिड़िया को,
और ले लेता है उसकी जान।

– रवि झा
(2059) बैच–2011–18

एलुमनाई की कलम से

ज्योति कुमारी
(2149), बैच – 2012 – 2019

गुफ्तगू

बात कुछ दिनों पहले की है। मैं बिस्तर पर लेटे बड़े चाव से देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित चंद्रकांता उपन्यास पढ़ रही थी। सहसा बिजली चली गई और पूरे कमरे ने तम का चादर ओढ़ लिया। बचपन से चली आ रही परंपरा के अनुसार मैंने भी तुरंत कहा, 'धत! तुझे भी अभी ही जाना था'। मगर आज कुछ नया हुआ, एक धीमी सी आवाज मेरे कानों में पड़ी। यह आवाज किसी सज्जन की थी। जो मेरे किए हुए प्रश्न के जवाब में बोले, 'मेरे आते ही तुम लोगों को बुरा क्यों लगता है'?

चारों ओर अंधेरा होने के कारण मैं उनका चेहरा नहीं देख पाई, मगर इतना जरूर समझ आ गया कि वह आस-पास में ही है। मुझे शंका हुई इतनी रात को बिजली चली जाने के बाद मेरी कमरे में यह कौन है? कहीं यह चोर तो नहीं ? मैं घबराई और सहसा मेरे मुंह से निकल गया, 'जनाब आप चोर तो नहीं हैं' ?

थोड़ा हंस कर वे बोले 'नहीं नहीं, मैं किसी पार्टी का सदस्य नहीं जो चोर होऊंगा। तुम व्यर्थ ही चिंतित हो रही हो, मैं यहां से कुछ चुराने नहीं आया हूं। मैं तो एक तुच्छ प्राणी हूं, जिससे लोग मिलते तो रहते हैं मगर कभी उसे जानने का प्रयास नहीं करते'।

अब मेरी चिंता बढ़ने लगी कि आखिर ये हैं कौन, और इस वक्त मेरे कमरे में क्या कर रहे हैं? मुझसे अब रहा नहीं गया, मैं उनसे पूछ बैठी 'आप अपना परिचय दें, मुझे आपको पहचानने में तकलीफ हो रही है'।

'अंधकार' कहकर वह चुप हो गए। मुझे संदेह हुआ कि कोई मेरे साथ ठिठोली तो नहीं कर रहा क्योंकि गांव में यह आम बात है। मगर दोबारा पूछने पर भी उनका यही जवाब रहा। अब मेरी आवाज लड़खड़ाने लगी थी और सर पर पसीना आ गया था कि कहीं यह कोई साया तो नहीं?

मेरे डर को वह भांप गए और बोलो 'मुझे समझ नहीं आता तुम मानव जाति मुझसे डरते क्यों हो जबकि मुझसे ज्यादा खतरनाक तो तुम लोग स्वयं हो'। अब यह बात सिर्फ मेरी ना रह कर समस्त मानव जाति के स्वाभिमान पर आ गई। हां यह बात अलग है कि हम आपस में ही कटते - मरते रहते हैं लेकिन उनके द्वारा कही गई बात मुझे हजम न हुई। गुस्से में फिर मैं बोली 'चलो मैं मानती हूं कि हम मानव खतरनाक हैं, क्योंकि हम जब चाहें तब तुम्हें मिटा सकते हैं, मगर तुम कोई एक भी ऐसा कारण बताओ जो यह साबित कर सके कि तुम "खतरनाक" या यूं कहें कि "डरावने" नहीं हो'।

मानो जवाब उनके पास तैयार ही था, वह तुरंत बोल उठे 'हम मिटते इसलिए हैं क्योंकि हमारा हाल उस आशिक की तरह है जो पंछी होते हुए भी पिंजरे से मुहब्बत कर बैठा है, इसलिए तो उजाले के खातिर हम खुद को मिटा देते हैं। और जहां तक बात डरावने होने की है, तो मेरा कोई स्वरूप ही नहीं, तो मैं डरावना कैसे हो सकता हूं। मैं तो तुम्हें एकांत में लाकर तुम्हारे ही स्वरूप को गढ़ता हूं। तुम्हें खुद के ..... '

बिजली पुनः आ गई और बातें अधूरी रह गई। मेरे मुख से वही शब्द दोबारा निकला 'तुझे अभी ही आना था', मगर इस बार जाना के जगह पर आना ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया। भले ही हमारी वार्ता अधूरी रह गई हो, मगर यह बात तो समझ आ गई कि सारा खेल हमारे नजरिए का है। हम जिस नजरिए से देखेंगे, दिखाई भी वैसा ही देगा।

एलुमनाई की कलम से

डॉ अरविन्द कंचन
(551) बैच – 1992–99

स्वास्थ्य और जीवन शैली

आप अपनी रोग-प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए क्या कर सकते हैं? वस्तुतः रोग-प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ाने का विचार अत्यंत ही रोमांचक है, परन्तु ऐसा कर पाना हमेशा मायावी ही साबित हुआ है। प्रतिरक्षा प्रणाली का अच्छी तरह से काम करने के लिए शरीर के सभी तंत्रों का सुचारु रूप से काम करना और उनका आपसी संतुलन और सद्भाव अत्यावश्यक है। अभी भी चिकित्सा-शोधकर्ताओं को प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया की बहुत सी पेचीदगियों और अन्तर्सम्बन्धों के बारे में नहीं पता है। वैसे तो जीवनशैली और प्रतिरक्षा के बीच कोई सीधा संबंध नहीं हैं, लेकिन स्वस्थ जीवन शैली चुनना और सामान्य / अच्छे स्वास्थ्य दिशानिर्देशों का पालन करना प्रतिरक्षा क्षमता बढ़ाने की दिशा में सबसे अच्छा कदम है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-

- मानसिक तनाव को कम करने की कोशिश करें
- धूम्रपान न करें
- आहार में फलों और सब्जियों का ज्यादा से ज्यादा सेवन करें
- नियमित रूप से व्यायाम करें
- स्वस्थ शारीरिक वजन बनाए रखें
- पर्याप्त नींद सुनिश्चित करें

संक्रमण से बचने के लिए आवश्यक कदम उठाएं, जैसे कि अपने हाथों को बार-बार धोना, शुद्ध जल ग्रहण करना और भोजन को अच्छी तरह से पका कर खाना ।

स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली को नियमित और स्वस्थ पोषण की आवश्यकता होती है। चिकित्सा-वैज्ञानिकों ने लंबे समय से माना है कि जो लोग गरीबी में रहते हैं और कुपोषित होते हैं, वे संक्रामक रोगों की चपेट में रहते हैं। प्रतिरक्षा प्रणाली पर पोषण के प्रभावों के सबूत बताते हैं कि विभिन्न सूक्ष्म पोषक तत्वों (जस्ता, सेलेनियम, लोहा, तांबा, फोलिक एसिड, और विटामिन A, B, C और E) की कमी प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन करती हैं। वर्त्तमान समय में बाज़ार में उपलब्ध कई उत्पाद प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने का दावा करते हैं, लेकिन इस तरह से प्रतिरक्षा को बढ़ाने की अवधारणा का वास्तव में वैज्ञानिक सोच से बहुत कम वास्ता है। अपने शरीर में प्रतिरक्षा कोशिकाओं की संख्या को बढ़ाने की रणनीति जरूरी नहीं कि हमेशा कारगर हो। उदाहरण के तौर पर कई एथलीट जो 'डोपिंग' में संलग्न होते हैं, वे अपने शरीर में रक्त पंप करने की क्षमता और रक्त कोशिकाओं की संख्या को बढाकर अपने प्रदर्शन को तो बढ़ाते हैं, लेकिन साथ-साथ अपने लिए घातक हृदय रोग और स्ट्रोक होने की संभावना भी बढ़ा लेते हैं। अतः ऐसे किसी भी लोक-लुभावन उत्पादों के प्रयोग करने से पहले समुचित चिकित्सीय राय और परामर्श जरूर लेनी चाहिए ।

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के घनिष्ठ संबंधों का अध्ययन कर रही है। दुनिया भर में बहुत सारे चिकित्सा-वैज्ञानिक तनाव और प्रतिरक्षा प्रणाली के संबंध पर शोध कर रहे हैं। हालांकि, अचानक होने वाली अल्पकालिक तनाव का अध्ययन कम होता हैं, इसके बजाय, निरंतर और लगातार होने वाली (Chronic) तनावों का अध्ययन ज्यादा होता है, जैसे कि परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ संबंधों के कारण, या किसी के काम में अच्छा प्रदर्शन करने के दबाब से उपजी चुनौतियां। वैज्ञानिक इस बात की भी जांच कर रहे हैं कि क्या तनाव से प्रतिरक्षा प्रणाली पर कोई प्रामाणिक असर पड़ता है। हृदय रोग, मोटापा, पेट खराब और पित्ती यहां तक कि श्वसन रोग सहित कई प्रकार की विकृतियां भावनात्मक तनाव के प्रभावों से जुड़ी हुई हैं। तनाव की स्थिति को पूर्ण रूपेण परिभाषित करना अत्यंत मुश्किल है। एक व्यक्ति के लिए जो स्थिति तनावपूर्ण हो सकती है, वही दूसरे के लिए नहीं। चिकित्सक केवल उन चीजों को माप सकता है जो तनाव को प्रतिबिंबित कर सकते हैं, जैसे कि प्रत्येक मिनट में दिल की धड़कन की संख्या, लेकिन ऐसे लक्षण

चित्रः सुभाष कुमार, 2474 कक्षा-10

भी अन्य कारकों को दर्शा सकते हैं।

नियमित योग, प्राणायाम और शारीरिक व्यायाम स्वस्थ रहने के स्तंभों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह मानसिक और हृदय सम्बन्धी स्वास्थ्य में सुधार करता है, रक्तचाप को कम करता है, शरीर के वजन को नियंत्रित करने में मदद करता है और कई तरह की बीमारियों से बचाता है। लेकिन क्या यह आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को स्वाभाविक रूप से बढ़ावा देने और इसे स्वस्थ रखने में मदद करता है? यह अब भी शोध का विषय है । फिर भी यह तो माना ही गया है कि एक स्वस्थ आहार की तरह, नियमित योग, प्राणायाम और शारीरिक व्यायाम अच्छे स्वास्थ्य के नियमन में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है और एक स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए भी ।

सबसे आखिरी में एक और महत्वपूर्ण विषय - समुचित और पर्याप्त नींद । नींद एक प्राकृतिक अवस्था है और स्वस्थ रहने के लिए इसका ध्यान रखना रखना अपरिहार्य है। नींद आपको तरोताजा महसूस करवाती है। खराब या अल्प निंद्रा की वजह से व्यवहार या यादाश्त सम्बन्धी या फिर ब्लड शुगर, रक्तचाप जैसी अन्य दीर्घकालिक समस्याएं हो सकती हैं । शोधकर्ताओं का कहना है कि अच्छी नींद लेने से आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत हो सकती है। हाल के एक अध्ययन में पाया गया है कि नींद की गुणवत्ता आपके शरीर में टी-कोशिकाओं को प्रभावित कर सकती है, जो संक्रमण से लड़ते हैं और वायरस या अन्य रोगजनकों द्वारा संक्रमित कोशिकाओं को नष्ट होने से बचाते हैं ।

इसलिए बहुत जरुरी है कि हम स्वस्थ्य रहें और मस्त रहें। एक स्वस्थ जीवन शैली को अपनाकर हम तमाम प्रकार के रोगों से दूर रह सकते हैं ।

(डॉ अरविन्द कंचन ने 2006 में सम्बलपुर विश्वविद्यालय, ओड़िशा से M.B.B.S. की डिग्री हासिल करने के बाद लेडी हार्डिंग कॉलेज, दिल्ली से 2011 में शरीर क्रिया (Physiology) में M.D. किया। वर्तमान में वे हिन्द चिकित्सा महाविद्यालय, बाराबंकी, (उत्तर प्रदेश) में शरीर क्रिया विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। उनसे मोबाइल नं. 7698285445 व ईमेल dr.kanchan.arvind@gmail.com पर संपर्क किया जा सकता है)

एलुमनाई की कलम से

DOWN THE MEMORY LANE.....

My Navodaya, My Pride
Being the best days of my Life
From younger years, till this moment here
Has given me the wings to Fly.

A li'l mommy girl, living in unknown world
With a dream in eyes, to reach for the sky
Barely does she know, how to live on her own
Sensed some fright, but never had cried.

Leaving behind the hidey-hole,
set for a bigger goal
Goal to study precise,
and slowly started to enjoy
Gossip, Games, Sports & Friends,
forgotten all her pain
Now everything seems so right
that she leaves behind all the fright.

But amid all she didn't realize,
how 7 years had flown by,
Here the day has come, to say every one,
a teary GOOD BYE.

Chhawi
(486) Batch – 1991–98

We are Back Benchers...

We are the Back benchers...
Always happy and adventurous.
Not easy to judge our notorious mind,
We generally think out of sky.
Ever ready to face up & down,
And always eager to wear a new crown.
From the unique place of the class,
We can see everyone.
Like spectator of the stadium,
Who can enjoy all the fun.
But never show pride to anyone.
We are the Back benchers...

Keep watching the whole class,
Who is sleeping, who is lost,
And who is playing criss-cross.
However, teacher throw chalk missile on us,
But we never complain to anyone.
We are the Back benchers...

Always waiting for our turn,
To read a Para in the class.
But we rarely get a chance,
As the class gets adjourned.
But never show our happy tears to anyone.
We are the Back benchers...
I always cherish the moments,
To be a Back bencher for 7 years,
With full of emotions & happy memories,
And friendship forever.
No one can enjoy school life,
More than the Back benchers...

Geetanjali
(464) Batch 1991–98

एलुमनाई की कलम से

Vikash Kumar
(800) Batch – 1995–2002

Career in Art, Design & Architecture

"Every child is an artist. The problem is how to remain an artist once he grows up." This statement of world-famous artist Pablo Picasso says a lot about us. Art is always with us, deep inside us, but it is up to us to realise it and let it prosper.

I vividly remember, I was in class 12th and Board exams were very close. Being a student of 'Science' , my fate was almost sure – I was destined to be a Doctor according to my family. But I knew that I was not interested in medical field. I wanted to join the field of 'Art & Craft' and make a career for myself. But, this was a very tough decision and it required immense guts and strength to make this decision – opt painting as my subject for higher education. Notwithstanding the dilemma, I decided to go with Art (Painting).

Soon I realised that there was no one around me to guide. After discussing this issue with my parents, I headed for Varanasi (Banaras) for Bachelors in Fine Arts (B.F.A.). Thereafter, I continued to move on and step-by-step I built my career, though after facing lots of hardships. Today, I cherish my life where I am able to pursue my 'passion' in my career. I can say with conviction that there is a landmark difference between the day I made that decision and the present day. So, I took a pledge that I won't allow my younger brothers and sisters face the challenges I had to face in my past.

Unlike the older times, nowadays, there is huge scope in the field of Art, Design and Architecture. If you are studying in Class 12th in any stream, be it Science, Arts or Commerce, and you have interest in drawing / painting and craft, then you have numerous opportunities in this field. For example, with maths subject you could be an Engineer, but if you have good knowledge of drawing then you could be more than that. With Maths and drawing skill both at hand, you could be a great Architect, where both skills are required. You can learn drawing early with regular practice and hence should start as early as you can - few seats are offered by Colleges in these fields and entrance exams are very tough.

Thus, you can build your career in three fields …Art , Design and Architecture. Generally Art refers to Fine Art or Visual Art. Many people consider Fine Art only in Humanities subjects like History, Geography etc, but that is not true. Art could be applied in various fields. Strictly by definition, "Fine Art is the study & making of visual works of art. It can be in the form of dancing, painting, photography, film, architecture, etc." You can study in these fileds up to highest level, including Ph. D. from many recognised Universities. Some important facts and facets of this field are enumerated in succeeding paragraphs for the benefit of those who want to pursue this as a passion as well as a career.

Art

- **Course Name:** BFA (Bachelor of Fine Art) - later can do MFA, Ph D and prepare for NET(National Eligibility Test).
- **College / University** : Banaras Hindu University (BHU, Uttar Pradesh; College of Art , New Delhi; Sir J. J. College of Art, Mumbai; MaharajShivajirao University Baroda, Gujrat etc. . (Admission through Entrance Exam).
- **Eligibility :** 10+2 in any stream or after 10th Vishwa Bharati Shantiniketan provides 5 years diploma programme, which is equivalent to Degree.
- **Age:** Maximum 21-23 Years, according to different colleges.
- **Department** : Painting, Graphic (Print Making), Applied Art, Sculpture etc.
- **Career Options :** Illustrator, Multimedia Programmer, Drawing Teacher / Professor, Set Designer, Editor, Sculptor, Print Maker, Art Director, Animator etc.

Design Institutes

- **National Institute of Design (NID):** NID Ahmedabad, Bengaluru & Gandhinagar and NID Andhra Pradesh, NID Haryana, NID Madhya Pradesh and NID Assam are autonomous Institutes under Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT), Ministry of Commerce & Industry, Government of India. (www.nid.edu)
- **Courses:** Bachelor of Design (B.Des.) of four-year duration, Masters of Design (M.Des.) of two-and-a-half year duration and Ph.D. in Design. The four-year-long Graduate Diploma Programme in Design (GDPD) is offered at NID Andhra Pradesh, NID Haryana, NID Madhya Pradesh & NID Assam in the areas of specialisation to include Industrial Design, Communication Design, Textile & Apparel Design.
- **Admission Procedure** :Admission to all the programmes at NID is on the basis of the candidates' performance in the two-stages of Design Aptitude Test to assess the knowledge, skills and behavioural abilities of candidates;-
- **Stage 1:** Design Aptitude Test (DAT) Prelims - Conducted at various test centres across India.
- **Stage 2:** Design Aptitude Test (DAT) Mains - Candidates shortlisted after the DAT Prelims are invited to appear for the Stage 2.
- NIFT (National Institute of Fashion Technology): Set up in 1986, Under Ministry of Textile, Govt. of India, NIFT offers B.Des. (Fashion Design), B.Des. (Leather Design), B.Des. (Accessory Design), B.Des. (Textile Design), B.Des. (Knitwear Design), B.Des. (Fashion Communication), B.FTech. (Apparel Production) (www.nift.ac.in). Eligibility any stream except B.F. Tech (Maths subject is required), Admission process is like NID.
- **(Bachelor of Fine Art) -** later can do MFA, Ph D and prepare for NET(National Eligibility Test)
- **College / University** : Banaras Hindu University (BHU, Uttar Pradesh; College of Art , New Delhi; Sir J. J. College of art, Mumbai; MaharajShivajirao University Baroda, Gujrat etc. (Admission through Entrance Exam).
- **Eligibility :** 10+2 in any stream or after 10th Vishwa Bharati Shantiniketan provides 5 years diploma programme, which is equivalent to Degree.
- **Age:** Maximum 21-23 Years, according to different colleges.
- **Department :** Painting, Graphic (Print Making), Applied Art, Sculpture etc .
- **Career Options :** Illustrator, Multimedia Programmer, Drawing Teacher / Professor, Set Designer, Editor, Sculptor, Print Maker, Art Director, Animator etc.

Architecture

- **Entrance:** To be an Architect one has to qualify in one of the following exams:-

1. **AIEEE** (All India Engineering Entrance Examination) – JEE Advance(2nd paper drawing). JEE Advanced is jointly conducted by IIT Bombay, IIT Delhi, IIT Guwahati, IIT Kanpur, IIT Kharagpur, IIT Madras and IIT Roorkee. These institutes offer admission in undergraduate courses leading to a bachelor's, integrated masters or bachelor-master dual degree in engineering, sciences, or architecture.
2. **NATA** (National Aptitude test of Architecture). NATA is conducted by the Council of Architecture (COA) for admission to Bachelor of Architecture (B. Arch.) degree courses at all the recognised institutions. Candidates are eligible to apply for NATA if they clear 10+2 or equivalent passed / appearing.

- **Colleges:** School of Planning And Architecture, Delhi; Indian Institute of Technology, Kharagpur; Sir J. J. College of Architecture, Mumbai; Birla Institute of Technology, Mesra, Chandigarh; Jamia Milia Islamia University, New Delhi; National Institute of Technology, Tiruchirapalli; Center for Environmental Planning and Technology University, Ahmedabad; CEPT University, Ahemdabad, Gujrat etc.
- **Career Options:** Architecture Designer, Architecture Engineer, Interior Designer, Architecture Draftsman, Technical Assistant, Project Assistant Manager, Sales/ Business development Manager, Architectural Assistant, Architectural Historian/Journalist, Art Director, Building Contractor, Landscape Architect.

(Vikash Kumar has done Bachelor of Fine Art (Painting) from Allahabad University and subsequently obtained the degeree of Master Of Design (Specialization in communication) from National Institute of Fashion Technology, New Delhi. He participates in Live telecast programs on Doordarshan, Swayam Prabha Channel as Art education expert. He's presently teaching as TGT (AE) in Kendriya Vidyalaya Sangathan since 2011. He also worked for set design for INTV production for serial "Kyonki Jeena Isi Ka Naam Hai", sponsored by UNISEF. He has been awarded "State Lalit Kala Academy Award" of Uttar Pradesh in 2008 and "State Lalit Kala Academy National Award of same state in 2010. He may be contacted for career counseling in this field. Phone : 7840840409, E-mail: vikashkumarnift@gmail.com)

एलुमनाई की कलम से

BIBHU MISHRA
(916) Batch–1997–2004

Blueprint for Navodaya Vidyalaya 2.0

(Published in Online Version of Times of India on 07 May 2020)

Historically, quality education had been a luxury and entitlement for urban and wealthy families. The rural households remained underprivileged and struggled even to access good school education. After four decades of an Independent India, the then Prime Minister Rajiv Gandhi aspired to set up a network of schools in every district of India to provide not only quality education but also to ensure holistic development of the students. These schools were named: Jawahar Navodaya Vidyalayas (JNVs).

JNVs were established in the year 1986 and since then it has proven to be a silver lining in the arena of school education. The motto of JNV is 'Pragyan Brahma' a Sanskrit phrase which in English means 'Pure Knowledge is God'. P V Narsimha Rao, a distinguished scholar himself conceptualized its design as the then Human Resource Development Minister.

As of 30th September 2019, a total of 636 JNVs are functional in the country with about 2, 65,574 students enrolled and out of which 2, 06,728 (~78%) are from rural areas. Performance-wise, in 2019, JNVs were the top-ranked C.B.S.E. schools, having a pass percentage of 98.57% and 96.62% in 10th and 12th grades respectively.

JNVs are unique in many aspects. It was set-up with an idea of inclusivity and social justice and predominantly for underprivileged and disadvantaged students from rural areas. It resembles the ancient Gurukul system of schooling, wherein gifted children are selected and provided with the best quality education along-with interpersonal skills. The education along-with boarding, lodging, uniforms and textbooks is free, a nominal

fee of Rs. 200/- per month will have to be paid by the students from Grade 9 to 12. However, students belonging to Scheduled Caste and Scheduled Tribe category, girls, differently-abled, and below poverty line families are exempted from payment of fees.

A normal day at JNV starts with physical training followed by breakfast and morning assembly. During the morning assembly, students sing a prayer together and also take a pledge which reads "To my country and my people, I pledge my devotion. In their wellbeing and prosperity alone, I pledge my devotion". The morning assembly ends with the beautiful chorus of students and musical instruments coming together to sing our National Anthem.

In addition to academics, JNVs aim to foster and strengthen national integration by 'student migration policy'. Students of grade nine would go to a JNV of a different state and get exposure of a different society and culture. The three-language formula was an innovative thought ahead of its time along with the co-curricular activities that contributes to the overall development of the student. In 34 years of its existence, the huge alumni community of JNVs across India has contributed immensely in building modern India as well as in shaping the policies around the world. The educationists and policymakers have realized that real-life learnings happen outside the classroom. JNVs envisioned the same more than three decades ago. Having said that, like any other great institution, JNVs also need to revive itself to not only remain relevant but also be significant and effective in the coming decades.

So, how would that look like? What could be the roadmap for JNV 2.0?

The World Bank came up with the SABER [Systems Approach for Better Education Results] model to help countries systematically strengthen their education system. It calls the element between the education system's inputs [monetary and other resources that get into it] and its outcome [such as years of education completed, and learning acquired by the students] as a "black box". But what is inside this box has a great deal of influence on what students learn.

The pass percentage was a good indicator probably a decade ago, but is it really a good indicator now? JNVs were the best schools in the respective districts but are that the case now? The answer is probably 'No'. The world outside has changed drastically, but did the JNVs? So, what needs to be done?

Upgrading the Infrastructure

The first and foremost priority is to upgrade the existing infrastructure like Hostels, Classrooms, Libraries and Laboratories, Sports and Technology. Additionally, there should be a policy in place to review the infrastructure periodically. Students must feel proud to be the part of system and get facilities better than the best school in that particular district. Moreover, the intake into JNVs should be increased considering India's population growth and more resources at Government's disposal.

Reinvigorate the pedagogy: Experiential learning is evolving as the most effective teaching methodology globally. Our traditional curriculum is biased towards intelligence quotient (IQ) and mostly leaves out emotional quotient. World Economic Forum (2016) rightly points out "Today's job candidates must be able to collaborate, communicate and solve problems – skills developed mainly through social and emotional learning (SEL)". Fortunately, that's not the case with JNV students. The system is intrinsically designed to balance the development of IQ and EQ both. However, the JNVs now have to raise their bar. The times are changing rapidly in the field of school education and to be at par with the best in the world, some metamorphosis is needed. JNVs were way ahead for many years and now it's high time to revitalize the pedagogy to remain globally competitive and successful. Additionally, JNVs also provide opportunities to learn painting, music and sports. But it is still a secondary focus and academic talent is valued more. There is a strong need to build a path for talented students who wish to make a career in painting, music and sports. Going forward this should be one of the performance indicators.

Systemic Improvements

The administrative system of JNV must function digitally. This would increase efficiency, transparency and effectiveness over a period of time. The online portal to track students as well as teachers' performance is absolutely necessary. The NITI Aayog evaluation report calls for revamping the admission procedure: "there is a need to relook into the admission procedure and criteria for making it more accessible for rural talent. An income criterion for admission is desirable as the chunk of parents with their wards studying in JNVs fall in the middle income or service category".

Teachers are the soul

If students are the heart of JNVs, teachers are its soul. In the residential setting teachers play the dual role of educators as well as the parents. For the first part students mostly observe and learn. Teachers must show high level of leadership, adaptability and ethical standards as they are communicating mostly through their behavior. For the second part i.e. educator, several new initiatives are required. The teachers feel that they are burdened with non-teaching assignments and that negatively affects their primary responsibility. With more time in hand teachers can go for the exchange programmes nationally and internationally. To train the young minds, teachers also have to hone their skills regularly and this would happen only when they will have more time in hand to reflect and learn.

International partnerships

If the 20th-century design required inter-state collaboration (JNV migration policy), the 21st-century design requires international collaboration. Maybe its time for the JNVs to start teaching an additional foreign language. Furthermore, the students and teachers should be given opportunities to collaborate as well as compete with the best in the world.

(Jointly authored with Rashmika V.)

एलुमनाई की
कलम से

Dr. Dipti Kumari (514)
Batch : 1991-98

Agriculture: Hope of Indian Economy

There are several challenges before agriculture in India. The availablity of quality seeds always remains a big problem for majority of farmers, now it is coupled with pandemic

The crisis of COVID 19 pandemic has changed the world completely in the last few months. Economic activity has come to a near standstill, though now it is opening up gradually. Economic indicators show what was expected, production in factories is in its lowest level in recent past and services have suffered huge losses and still counting. There is no hope of revival of these sectors. In a Confederation of Indian Industry (CII) survey, about 45 per cent of CEOs in India said they don't see economic normalcy returning before a year. Another 36 per cent were more optimistic but said it would take 6-12 months for economy to function with normalcy.

The Indian economy is hugely depending upon agriculture at this given point of time. And, the good news is that India is expecting record food-grain production at almost 300 million tonnes -- 298.32 million tonnes to be precise (149.92 MT kharif + 148.4 MT rabi). As on June 1, FCI (Food Corporation of India) had unprecedented grain stocks of 97 million metric tonnes (mmt) in the Central Pool. Even on July 1, FCI is likely to have grain stocks of about 91-92 mmt, against a buffer stock norm of 41.12 mmt that are required for the Public Distribution system (PDS), and some strategic reserves. So, compared to this norm, on July 1, FCI will have “excess stocks” of at least 50 mmt.

Record produce of agriculture is expected on the basis of certain factors. Prediction of a normal Monsoon by Indian Meteorological Department (IMD) is a good relief, on the other hand availability of surplus laborer due to return of migrant workers from urban areas is a boost for agriculture. Central and State Governments have also announced various exemptions & relief to this sector which will be helpful.

There are several challenges before agriculture in India. The availablity of quality seeds always remains a big problem for majority of farmers, now it is coupled with pandemic. Shortage of ground water due to excessive use in corona time also inereases dependency on a very good monsoon. The availability of market and storage is one of the most consistent and biggest problem of this sector. Often it is heard that the produce of the farmers is unsold or they are compelled to sell at very low price than the MSP.

The government have to ensure that agriculture sector must be in such a position to Hold the Indian Economy, even if its contribution in GDP is quite low as about 16% but it gives employment to more than 50% of population. Moreover, this sector has responsibility to feed about 130 crores.

(References: indianexpress.com; icar.org.in; businessstandard.com; indiatoday.in)

संपर्क का सुखद अहसास
Establishing the Connectivity

उत्साह कुमार
(26), बैच : 1986–93

विद्यालय की शुरुआती यादें

साल 1986 का दिसंबर महीना। आधे से ज्यादा महीना गुजर चुका था, जब हम नवोदय विद्यालय में नामांकन के बाद पहुंचे। चूंकि ये आवासीय विद्यालय था, इसलिए पढ़ाई के साथ ही हमें वहीं रहना भी था। मन में एक नये उत्साह के साथ बारी-बारी से हम 80 छात्र वहां पहुंचे- 75 लड़के और 5 लड़कियां। हम पहले बैच के छात्र थे। हमें जहां रहना और पढ़ना था, वो जगह एकदम से वीरान सी थी। आज तो आसपास अच्छी-खासी आबादी है, लेकिन उस वक्त कुछ नहीं था। हां, बगल में कुछ ही दूर हटकर जेल जरूर थी, लेकिन वहां भी बहुत आवाजाही नहीं थी। मन में नई तरंगें लिए हम छात्र जरुरत के सामानों से भरी अपनी-अपनी पेटी लिए हॉस्टल में अपने लिए निर्धारित जगह पर पहुंच तो गए, लेकिन अंदर एक अंजाना भय भी महसूस हो रहा था। छठी क्लास के बच्चे और पहली बार परिवार से दूर होकर अकेले रहना, क्या इतना आसान था? नहीं, बिल्कुल नहीं। वो भी एक सुनसान-सी जगह पर। घर पर बच्चों को किसी बात के लिए सोचने की जरुरत नहीं होती, लेकिन यहां तो अब सबकुछ खुद से ही करना था। कहने को तो हम 80 बच्चे आए थे, लेकिन सब एक-दूसरे से अंजान। शिक्षक से लेकर तमाम स्टाफ, सब हमारे लिए नये थे। शुरुआत ही थी, इसलिए बहुत ज्यादा टीचर या स्टाफ भी नहीं था। हां, पता लगते-लगते ये पता चला कि प्रिंसिपल सर शत्रुघ्न प्रसाद सैनिक स्कूल, तिलैया से आए हैं। उनके साथ ही खाना बनाने के लिए ज्यादातर रसोइए भी वहीं से आए थे। मोहन, हफीज़, बालेश्वर आदि। टीचर में एके मिश्रा सर, आरके यादव सर, परमानंद महतो सर के बारे में पता चला था। इन सबका निवास हमारे हॉस्टल से कुछ दूरी पर था। हमारे लिए दो मंजिला हॉस्टल बहुत बड़ा था। बड़े-बड़े हॉल। हम छात्रों को नीचे यानी ग्राउंड फ्लोर पर रखा गया था। शुरू में 80 में से कुछ छात्र आए भी नहीं थे। तो जितने थे उनमें जान-पहचान भी नहीं थी। इसलिए, उस बड़े से हॉस्टल में रहने को लेकर एक डर सा तो था ही।

खैर, रहना यहीं था तो रहना शुरू हुआ। एक एकदम अलग

रूटीन लाइफ। सुबह-सुबह पीटी, फिर मेस पहुंचकर नाश्ता करना। उसके बाद प्रार्थना, क्लास। दोपहर में फिर मेस में खाना खाकर हॉस्टल आकर पढ़ाई करना। शाम को मैदान में खेलकूद, फिर शाम को हल्का नाश्ता और उसके बाद हॉस्टल लौटकर अटेंडेंस। उसके बाद फिर पढ़ाई का सिलसिला, बीच-बीच में निरीक्षण के लिए शिक्षकों का आना। रात में मेस जाकर खाना खाकर लौटना, इसी रूटीन को फॉलो करना था। धीरे-धीरे छात्रों के बीच आपसी जान-पहचान बढ़ती गई तो कुछ धमाचौकड़ी भी शुरू हुई। शाम तक तो सब ठीक रहता, लेकिन उसके बाद बातों-बातों में डर का कुछ-कुछ माहौल बनता और बनाया जाता। कोई कहता- ये हॉस्टल श्मशान के ऊपर बना है, तो कोई कहता उसने रात में बड़ी-बड़ी लाल-लाल आंखों वाले किसी को देखा। किसी का कहना था कि रात में खिड़कियों को बंद रखना चाहिए, क्योंकि उसने बाहर से किसी का पंजा अंदर लहराते देखा है। अच्छा, किसी और को भले ही इसका पता नहीं हो, लेकिन वो भी सामने वाले की

हां में हां ऐसे मिलाता था जैसे कि वो लोग तो शूरवीर हैं, इसलिए बच गए, वरना और कोई होता तो उसकी तो डर से जान ही निकल जाती। इन डरावनी बातों को लेकर अंधेरा होने के बाद ऊपर की मंजिल की ओर जाना तो दूर कोई सीढ़ियों के पास तक नहीं फटकता था। एक बार मैंने जैसे ही कहा कि ये भूत-प्रेत सब कुछ नहीं होता, मित्रों ने मुझे ऊपर की मंजिल पर जाने का चैलेंज ही दे डाला। मैंने भी तैश में आकर कदम बढ़ा दिया तो पीछे से आकर एक साथी मेरे हाथ में माचिस थमा गया कि ऊपर जाकर इसे रखकर आना, ताकि हमें सबूत मिल सके कि तुम सही में वहां तक गए थे। मतलब ये कि उन्होंने बीच से लौटने की गुंजाइश तक नहीं छोड़ी। अपने पापा के बताये अनुसार भूत-प्रेत के नहीं होने की बात मेरे मन में तो थी, लेकिन तरह-तरह की डरावनी बातें होते रहने से एक अंजाना डर तो सता ही रहा था। हालांकि अब मुझे चैलेंज कर दिया गया था तो मेरे लिए रात में अकेले ऊपरी मंजिल पर जाना मजबूरी हो गई, नहीं तो हमेशा के लिए डरपोक का टैग लग जाता। अंदरूनी डर को समेटते हुए मैं उस ऊपरी मंजिल पर गया, जहां कोई भी नहीं होता था। खास बात ये थी कि उसी मंजिल पर बड़ी-बड़ी और लाल-लाल आंखें देखने का दावा कुछ साथी करते थे। डरते-सहमते मैं किसी तरह वहां पहुंचा और सबूतिया माचिस को वहां रखकर लौटा। संस्मरण तो ऐसे-ऐसे हैं कि कोई लिखने बैठे तो शायद उसे कई उपन्यासों में भी समेटना संभव नहीं होगा।

मेरे जैसे छात्रों के लिए नवोदय का महत्व वहां से निकलने के बाद और ज्यादा बढ़ गया। इसका अहसास उस वक्त बेहद हुआ जब ग्रेजुएशन के लिए रूम लेकर अकेले रहना हुआ। खुद पकाओ-खाओ या फिर होटल वगैरह जाओ। नवोदय में ना रहने, खाने-पीने का टेंशन। हर चीज की सुविधा, वो भी बिना किसी शुल्क के, यानि बिल्कुल मुफ्त। बस आपको पढ़ना होता था या फिर मेरे जैसे छात्र के लिए कहें तो पढ़ देना होता था। तभी तो वहां से आज भी वैसा ही जुड़ाव महसूस होता है, या ये कहना गलत नहीं होगा कि उससे भी ज्यादा जुड़ाव रहता है। नवोदय से निकले भले ही 27 साल बीत गए हों, लेकिन आज भी अगर वहां किसी कार्यक्रम को लेकर जाने की बात होती है तो मन में एक अलग जोश रहता है और पहुंचने की हरसंभव कोशिश रहती ही है।

संपर्क का सुखद अहसास
Establishing the Connectivity

अम्बुज कुमार
(391) बैच : 1990–97

छात्र, विद्यालय प्रांगण, सपने और मित्र

मधुबनी विश्वविख्यात है। इसकी परम्पराएं, यहां की लोक-कला, लोक-संगीत और साहित्य काबिल-ए-तारीफ़ है। अतीत से वर्तमान तक एक से एक पारंगत विद्वान और विदुषी ने मधुबनी में जन्म लिया है और विश्व में अपनी छाप छोड़ी है। यहीं एक विदुषी ने आदि गुरु शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। समूचा साहित्य जगत महाकवि विद्यापति के सम्मान में शीश झुकाता है। मधुबनी पेंटिंग का विश्व में एक नाम है। इस मिट्टी में जन्म लेना हमारे लिए एक गर्व की बात है।

लेकिन, मधुबनी न्यूयॉर्क भी नहीं है। 1980 और 1990 के दशकों में तो और भी नहीं था। एक छात्र के लिए यहां आधुनिक शिक्षा पाना लगभग नामुमकिन था। शिक्षा संस्थानों का विघटन हो रहा था। लेकिन, अतीत की गाथाएं एक बाल-मन में महत्वाकांक्षा की हिलोरे तो पैदा करती ही हैं। ऐसे समय में मधुबनी में जवाहर नवोदय विद्यालय का खुल जाना एक क्रांति से कम नहीं था।

हम सभी बच्चों में नवोदय विद्यालय में नामांकन पाना एक स्वप्न के साकार होने जैसा था। हमने इसके लिए कड़ी मेहनत की। जिला में जितने भी सरकारी विद्यालय हैं, वहां के सबसे मेधावी छात्र ही यहां स्थान बनाने में सफल हो पाए। एंट्रेंस एग्जाम भी तो अत्याधुनिक स्तर का था।

ज्यों-ज्यों विद्यालय में प्रवेश का दिन नजदीक आता गया, हमारे पेट में तितलियां फड़फड़ाने लगीं। 10-11 साल के बालक के लिए महत्वाकांक्षा अपनी जगह है और घर से दूर एक छात्रावास में जाकर रहने का ख्याल अपनी जगह। आखिर, वो दिन भी आ ही गया और हम नवोदय के प्रांगण में आ ही गए। एक बक्शा, एक छतरी, एक टॉर्च, एक लालटेन और पेट में बहुत सारी तितलियों के साथ। हम अकेले नहीं थे। हमारे साथ, हमारे जैसे 80 छात्र-छात्राएं थे। कोई ज्यादा उत्सुक था तो कोई ज्यादा सहमा हुआ।

विद्यालय आने से पहले हम कल्पना करते थे कि कौन हमें सबसे ज्यादा प्रभावित करेंगे शिक्षक गण, सीनियर्स, या मेधावी सहपाठी गण? लेकिन, विद्यालय प्रांगण में प्रवेश करते ही जिसने हमारी परिकल्पनाओं को आच्छादित कर लिया, वह विद्यालय प्रांगण स्वयं था। हम मधुबनी के गांव में पले-बढ़े थे। हमने इतनी बड़ी इमारतें, इतने नजदीक से नहीं देखी थी। न ही इतने बड़े खेल के मैदान में कदम रखा था। हमने फूलों की इतनी क्यारियां एक साथ नहीं देखी थीं। न ही इतने विशाल भोजनालय की कल्पना की थी। एक ही प्रांगण में एक दर्ज़न चापाकल के होने के बारे में भी नहीं सोचा था। एक ही बच्चा इतने सारे खेल-कूद में शामिल हो सकता है, ये कभी नहीं हजम हुआ। क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबाल, बैडमिंटन,

बास्केटबॉल और न जाने क्या-क्या। इन सबके लिए सिर्फ अलग-अलग परिवेश ही नहीं, बल्कि इन्हे खेलने के लिए वास्तविक सामग्रियां भी। और ये सब हमें छूने के लिए भी मिल रही थी और खेलने के लिए भी। हमारा बाल-मन सातवें आसमान पर था। 28-29 साल बाद भी, उस समय के बने मल्टीपर्पज हॉल, प्रयोगशाला, भोजनालय वगैरह के विशाल द्वार और खिड़कियों में लगे फ्रेश पेंट की गंध हमारी नाक में पुरानी याद की तरह बसी हुयी है। यह उस प्रांगण की विशालता और हमारे मानस पटल पर उसके अमिट छाप का प्रमाण ही तो है।

एक छात्र के लिए नवोदय विद्यालय का प्रांगण एक अनंत प्रेम की तरह है। हमारे सात वर्ष के आवास काल में इसने हमें अपनी विशाल कोख में पाला है, तो हमें एक पिता की तरह भय दिखा कर नियंत्रित भी किया है। एक बड़े भाई की तरह प्रतिस्पर्धा में पराजित भी किया है और हमें आने वाले समय के लिए जुझारू भी बनाया है। कभी हमने अनियंत्रित होकर, बागी बनकर, प्रांगण की ऊंची दीवारें फांगी, खेतों से गन्ने तोड़े, तो कभी शहर जाकर सिनेमा देखी। इसी प्रांगण ने हमें बड़ी बहन की तरह समय-समय पर दुलारा भी है। हमें फूल-पत्तों, घास की दूब, ओस की बूंदों, गुलमोहर की छांव, शीशम के झूलते डाल, रंग-बिरंगे गुलाब, बरसात में निर्मल बहती नालियां, जनवरी में दूधिया धुंध, फरवरी में सड़क के किनारे साथ चलते गेंदे की अनगिनत पंक्तियां, मार्च-अप्रैल में तेज़ चलती बयार, इन सब को प्यार करना सिखाया है। अब जबकि हम बड़े शहरों में आ गए हैं, भाग-दौड़ में प्रकृति और जीवन के सौंदर्य को भुला गए हैं, अभी भी उस सौंदर्य के अहसास ने हमें जिंदादिल रखा है। दूसरी बात जो हम पर तुरंत हावी हुई, वह थी घड़ी की सुई की नोक की सूक्ष्मता से पालन होती नवोदय की दिनचर्या। तड़के 4:30 पर घंटे की ध्वनि के साथ ही सुप्रभात की गूंज के साथ जागना, 5 बजे फिर घंटे की ध्वनि और व्यायाम के लिए भागना, 6 से 7 नहाना-धोना और स्कूल जाने की तैयारी, 7 बजे मॉर्निंग असेंबली की लाइन में लगना, 7:30 में पहली कक्षा, 8:50 में जलपान के लिए भोजनालय की कतार में खड़ा होना, 9 :30 में फिर से कक्षा में। 1 बजे भोजन। 3 बजे ग्रुप स्टडी। 4 : 30 बजे खेल के मैदान में। संध्या 6 से 7 हाउस असेंबली। 7 बजे से स्टडी पीरियड। 8:30 में रात्रि भोजन। ऐसे ही रात के 10 बजे तक। सब कुछ ऐसे जैसे घड़ी का आविष्कार नवोदय में ही हुआ हो। नवोदय प्रांगण और दिनचर्या का एक नवोदयन पर ऐसा असर है कि अगर उनका ब्लड रिपोर्ट लिया जाये तो उसमे RBC, WBC के साथ-साथ नवोदय के कुछ अणु भी दिखाई दे जायेंगे।

आज जब उन दिनों के बारे में सोचता हूं तो लगता है,यह उस 7 साल की दिनचर्या का ही परिणाम है कि वहां से निकला एक-एक छात्र जिस भी परिवेश में गया, वो वहां ढला भी और सफल भी हुआ। फिर भी, प्रांगण और दिनचर्या भौतिक अवयव हैं। एक इंसान को जो सही मायने में इंसान बनाता है, वो है इंसानी रिश्ता। और इंसानी रिश्ते को समझने और उसे बनाने के लिए नवोदय से खूबसूरत कोई स्थान नहीं हो सकता है। हॉस्टल के एक-एक हॉल में 40-50 बच्चे साथ पले-बढ़े हैं, और समय-कुसमय एक-दूसरे का साथ निभाया है, वह भी पूरे 7 साल तक। नवोदय हम मित्र बनाने नहीं गए थे, हम तो अपनी महत्वाकांक्षा और अपने माता-पिता के सपने को पूरा करने गए थे। यहां सभी छात्र प्रतिस्पर्धी थे। होने भी चाहिए। लेकिन हम बच्चे तो सदा मित्र की तलाश में ही रहते हैं। जो कि हमें मिल गए। पक्के मित्र। बहुत सारे। जीवन भर के लिए। यही हमारी पूंजी है। हमारे लिए नवोदय धरोहर है। ये रिश्ता ब्लड रिपोर्ट में नहीं दिखाई देता है। ये तो हमारे दिलों में एक संयुक्त कसक की भांति है, जो एक-दूसरे से मिलने पर एक क्षण के लिए साथ उठता है। और फिर हंसी-मज़ाक और किस्से-कहानियों में प्रवाहित होने लगता है।

वार्षिक गोष्ठी दिल्ली

वर्ष 2019 का वार्षिक सम्मलेन 29 सितंबर (रविवार) को राजधानी महाविद्यालय के प्रांगण में संपन्न हुआ। चूंकि विद्यालय के पूर्व छात्र डॉ अनिल कुमार इस महाविद्यालय में इतिहास के प्रोफ़ेसर हैं , विगत वर्षों की अपेक्षा इस साल वेन्यू के चयन और सम्मलेन के आयोजन में काफी सहजता रही। देश के विभिन्न कोने से आए पूर्व छात्र-छात्राएं इस वार्षिक सम्मेलन में शरीक हुए।

इस वर्ष के सम्मलेन में कनेक्टिविटी यानि संपर्क पर काफी जोर दिया गया। पूर्व छात्र-छात्राओं के आपसी संपर्क के अलावा विद्यालय के साथ संपर्क और अध्यनरत बच्चों के साथ संपर्क पर भी बल दिया गया। इस सन्दर्भ में "Get Connected – Stay Connected" पर तवज्जो दी गई। संपर्क के सभी माध्यमों - औपचारिक और अनौपचारिक पर सामान रूप से बल देने की बात हुई। इसलिए इस वर्ष का कार्यक्रम भी कुछ इस प्रकार आयोजित हुआ कि छात्र-छात्राओं को अधिक से अधिक समय एक-दूसरे से मिलने-जुलने के लिए मिल सके। कार्यक्रम की शुरुआत और अंत दोनों अनौपचारिक संपर्क के रूप में हुआ।

विद्यालय की ओर से प्राचार्य श्री त्रिपुरारी सिंह आयोजन में पधारे और उन्होंने आमना को विद्यालय की वास्तविकताओं से अवगत कराया। समारोह के दौरान विद्यालय और एलुमनाई परिवार से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर भी चर्चा हुई। सभी ने आमना के भूमिका की सराहना की और इस बात पर जोर दिया कि भविष्य में आमना, एलुमनाई और विद्यालय के बीच एक पुल का काम कर सकती है। भविष्य में आमना को और कैसे सशक्त बनाया जाए, इस बिंदु पर कई सुझाव आये, जिन्हें आने वाले समय में क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया। आमना की कोर समिति या समन्वयन समिति को यथावत बरक़रार रखने का सामूहिक निर्णय लिया गया, सिवाय 'चीफ बैच समन्वयक' के पद के, जिसके लिए सर्वसम्मति से सातवें बैच के डॉ. अरविन्द कंचन का चुनाव किया गया। छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के द्वारा अभ्यागतों का मनोरंजन भी किया। समारोह में आमना अध्यक्ष डॉ प्रशांत चौधरी और अन्य वरिष्ठ एलुमनाई के द्वारा वालंटियर एलुमनाई को प्रोत्साहन स्वरुप कुछ स्मरणिका भी प्रदान किया गया। सम्मलेन का अंत चाय पर चर्चा के साथ हुई। सभी लोगों ने इस संपर्क को और भी घनिष्ठ बनाने का प्रण लेते हुए एक-दूसरे को अलविदा कहा।

(संपादक मंडल के सौजन्य से)

वार्षिक गोष्ठी मधुबनी

डॉ अनिल झा

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी वार्षिक एलुमनाई मीट (आमना डे) 25 दिसंबर 2019 को जवाहर नवोदय विद्यालय रांटी, मधुबनी के प्रांगण में मनाया गया। उस दिन की सुबह विद्यालय एक खास बयार से सुगंधित था। वर्ष 2013 के दिल्ली की वार्षिक गोष्ठी के निर्णयानुसार विद्यालय प्रांगण में ही हर वर्ष 25 दिसंबर को एल्युमनी मीट की शुरुआत हुई। विद्यालय प्रबंधन का सहयोग ऐसा रहा कि प्रायः इस एल्युमनी आयोजन को विद्यालय के वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के साथ एक सूत्र किया जाने लगा। जैसे जैसे 25 दिसंबर का आयोजन बच्चों को भाने लगा, उन्होंने इस दिन को 'आमना दिवस' का नामांकरण कर दिया। 2018 से नई परम्परा 'सिल्वर जुबली' की शुरुआत हुई। वैसे तो नवोदय विद्यालय समिति दिसंबर के पहले रविवार एलुमनाई दिवस मनाती है लेकिन मधुबनी नवोदय में 25 दिसंबर 'एलुमनाई दिवस' के रूप में चिन्हित है। मगर सन् 2018 से ही आमना के पहल पर प्रथम बैच की अगुवाई में "सिल्वर जुबली वर्ष सेलिब्रेशन" की परंपरा की नींव पड़ी। इस वर्ष द्वितीय बैच (1987-94) ने इस परंपरा को मजबूती से और आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। कई महीनों के बाद, उस दिन दुनिया के कई कोने से 25 वर्ष पहले बिछड़े मित्रगण एक दूसरे से मुखातिब होने को लालायित थे - कोई सिंगापुर से, कोई अमेरिका, कोई दुबई से और बहुत से लोग देश के हर कोने से। इस पावन त्योहार को, जिसे कदापि किसी खास प्रोग्राम के शक्ल में ढालना मुश्किल था, उसे द्वितीय बैच ने योजनाबद्ध तरीके से आयोजित किया। 25 दिसम्बर की सुबह एक अलग ही विहंगम दृश्य था । मित्रगण एक दूसरे से ऐसे गले लगे मानो शरीर नहीं आत्मा का मिलन हो। वर्तमान छात्र-छात्राओं के द्वारा टीका लगाकर सबका भव्य स्वागत किया गया। आयोजक बैच के लिए विशेष परिचय-पत्र और कढ़ाई की हुई टोपी की व्यवस्था थी, जिसमें हर एलुमनाई का नाम और रोल नम्बर लिखवाया गया था। विद्यालय प्रांगण में प्रवेश के साथ ही सबको 'वेलकम किट' के तौर पर अरुण तिलक, फूल माला के साथ टोपी और परिचय पत्र दिया गया। गपशप, भरत-मिलन और चाय-नाश्ते के बाद दिवंगत साथी डॉ. आदित्य मंडल की स्मृति में द्वितीय बैच के सहयोग से निर्मित मुख्य प्रवेश द्वार - 'आदित्य द्वार'- का लोकार्पण भी किया गया । सम्मेलन में आगे सांस्कृतिक कार्यक्रम, आमना अध्यक्ष और प्राचार्य महोदय के संबोधन, खेलकूद, पुरस्कार वितरण, सिल्वर जुबली बैच द्वारा विद्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण इत्यादि शामिल रहा। दोपहर के भोजन के उपरांत सभी सिल्वर जुबली एलुमनाई को स्मृति के तौर पर मिथिला पेंटिंग की विशेष कलाकृति वाली चादर, दोपट्टा, मणिपुर की खास चादर भेंट की गई। विद्यालय से विदा लेने के बाद सारे मित्रगण अपने-अपने स्थान की ओर प्रस्थान करने लगे, ठीक उसी तरह जैसे प्रवासी पंछी मौसम बदलने पर अपने गंतव्य को दूर देश की उड़ान भरता

ALUMNI JOURNEY

Amarnath Anand
Managing Director & CO- Founder, (53) Batch 1986-93.

"Featured on the Cover Page of Silicon India's March 2020 Edition for his idea of switching to solar to save the planet and keep a check on the expenditures has brought in a new facet in green energy industry.

Navneet Kumar Batch (135) 1987-94.

Awarded Times Men of the Year at Patna in 2019."

"His first book भारत कैसे हुआ मोदीमय (ऐतिहासिक जीत की अंतर्कथा) became bestseller"

Santosh Kumar
(592) Batch 1992-99

STUDENT'S ART GALLERY

माखनभोग

संगीतसुधा

परिंदा

मुस्कान

सुभाष कुमार
(2474), कक्षा – दशम

हमीं नवोदय हों

हम नवयुग की नई भारती, नई आरती !
हम स्वराज्य की रिचा नवल, भारत की नवलय हों
नव सूर्योदय, नव चंद्रोदय, हमीं नवोदय हों !!

रंग जाति पद भेद रहित, हम सब का एक भगवान हो
संतान हैं धरती माँ की हम, धरती पूजा स्थान हो !
पूजा के खिल रहे कमल दल, हम भव जल में हो
सर्वोदय के नव बसंत के, हमीं नवोदय हों !!

मानव हैं हम हलचल हम, प्रकृति के पावन वेश में
खिलें फलें हम में संस्कृति इस, अपने भारत देश की !
हम हिमगिरि हम नदियाँ हम, सागर की लहरें हो
जीवन की मंगलमाटी के, हमीं नवोदय हों !!

हरी दूधिया क्रांति शांति के, श्रम के वंदनवार हो
भागीरथ हम धरती माँ के, सूरम पहरेदार हो !
सत शिव सुन्दर की पहचान, बनाए जग में हम
अंतरिक्ष के यान ग्यान के, हमीं नवोदय हों !!

हम नवयुग की नई भारती, नई आरती
हम स्वराज्य की रिचा नवल, भारत की नवलय हों !
नव सूर्योदय नव चंद्रोदय, हमीं नवोदय हों
हमीं नवोदय हों, हमीं नवोदय हों, हमीं नवोदय हों !!

अतुल कुमार (1916),
बैचः– 2009–14

Published By : Alumni Association of Madhubani NavodayA (AAMNA)
Website : www.jnvmadhubani.com Email : aamnaemag@gmail.com
Mob : 9582181470 (President), 7698285445 (Chief Batch Coordinator)